पौष माह, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 262 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 18 जनवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

न्यूज फ्लैश

देश के प्राकृतिक संसाधनों के मालिक नहीं, ट्रस्टी के रूप में कार्य करें वन अधिकारी: भूपेंद्र यादव

नई दिल्ली

केन्द्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने सोमवार को कहा कि वन अधिकारियों को बेजुबानों की आवाज के रूप में काम करने की जरूरत है। वन अधिकारी देश के प्राकृतिक संसाधनों के मालिक नहीं ट्रस्टी के रूप में कार्य करें, यह बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन, भूमि क्षरण, प्रदूषण और जैव विविधता की हानि जैसी समस्याओं के बीच वन अधिकारियों की भूमिका सतत विकास को आगे बढ़ाने और अभ्यास करने में और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। वे सोमवार को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून में प्रशिक्षित किए जा रहे 2020 बैच के 64 भारतीय वन सेवा (आईएफएस) प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भूपेंद्र यादव ने कहा कि शून्य कार्बन उत्सर्जन डेटलाइन, सौर ऊर्जा और जैव विविधता के संरक्षण, मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने के लिए केन्द्र सरकार प्रतिबद्ध है। इन लक्ष्यों को साधने के लिए उन्होंने वन अधिकारियों को रचनात्मक और नवीन विचारों के साथ आगे आने को कहा।

महाराष्ट्र-एमपी के स्थानीय चुनाव में ओबीसी आरक्षण के मसले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई टली

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के स्थानीय चुनाव में ओबीसी आरक्षण के मसले पर सुनवाई 19 जनवरी के लिए टाल दी है। मध्यप्रदेश के बाद आज महाराष्ट्र ने भी आरक्षित सीटों को सामान्य सीट घोषित करने के कोर्ट के आदेश में बदलाव की मांग की। तीन जनवरी को सुनवाई के दौरान केंद्र और मध्यप्रदेश सरकार ने अनुरोध किया था कि कोर्ट ओबीसी आरक्षण को निरस्त करने का अपना आदेश वापस ले। सामाजिक पिछड़ेपन के आकलन के लिए गठित आयोग चार महीने में अपनी रिपोर्ट दे देगी। इससे ओबीसी आरक्षण की कानूनी अड़चन दूर हो जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने 17 दिसंबर 2021 को मध्यप्रदेश पंचायत चुनाव में ओबीसी आरक्षण पर रोक लगाने का आदेश दिया था। कोर्ट ने कहा था कि ओबीसी आरक्षण को लेकर 4 दिसंबर 2021 को जारी किया गया नोटिफिकेशन सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के उलट है। कोर्ट ने कहा था कि ओबीसी आरक्षण वाली सीटों को अनारक्षित यानी सामान्य सीट माना जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने इन 27 प्रतिशत सीटों पर सामान्य सीटों की तरह चुनाव का निर्देश दिया था।

टेक्सास बंधक कांड: ब्रिटेन पुलिस ने दो किशोरों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की

लंदन

अमेरिका के टेक्सास में यहूदियों के पूजाघर में घुसकर वहां मौजूद लोगों को बंधक बनाने के मामले में ब्रिटेन की पुलिस ने दो किशोरों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ शुरू की है। अमेरिका के टेक्सास में शनिवार को एक बंदूकधारी हमलावर ने यहूदियों के पूजास्थल में घुसकर वहां मौजूद लोगों को बंधक बना लिया। बाद में उक्त हमलावर को मारकर पुलिस ने सभी बंधकों को रिहा करा लिया था। उक्त हमलावर की पहचान ब्रिटिश नागरिक मलिक फैसल अकरम के रूप में हुई थी। अब ब्रिटेन की पुलिस इस घटनाक्रम की तह तक जाने के लिए जांच कर रही है। सोमवार को ब्रिटेन की पुलिस ने दो किशोरों को हिरासत में लेकर उनसे पूछताछ शुरू की है। उल्लेखनीय है कि मारा गया हमलावर पाकिस्तान की तंत्रिका विज्ञानी आफिया सिद्दिकी की रिहाई की मांग कर रहा था। आफिया पर अलकायदा से संबंध रखने और अफगानिस्तान में सैन्य अधिकारियों को मारने की कोशिश के आरोप हैं। ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) से डिग्री लेने वाली आफिया को 2010 में 86 साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। आफिया टेक्सास की संघीय जेल में बंद है।

कोरोना के खिलाफ जंग होगी तेज

कोरोना के खिलाफ लड़ाई में सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया, अब मार्च 12 से 14 साल के बच्चों का लगेगी वैक्सीन, 3.45 करोड़ से अधिक किशोरों को दी जा चुकी है पहली खुराक

नई दिल्ली

कोरोना के खिलाफ लड़ाई में सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। कोविड-19 कार्यकारी समूह के अध्यक्ष डा. एनके अरोड़ा ने बताया कि कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में एक बड़ा फैसला लिया गया है। उन्होंने सोमवार को कहा कि मार्च से 12 से 14 साल के बच्चों का टीकाकरण शुरू होने की संभावना है क्योंकि तब तक 15 से 18 आयुवर्ग के किशोरों के पूरी तरह से टीकाकरण पूरा हो जाने की संभावना है। उन्होंने बताया कि 12 से 14 साल के आयु वर्ग में अनुमानित आबादी 7.5 करोड़ है।

3.45 करोड़ से अधिक किशोरों को दी जा चुकी है पहली खुराक: मालूम हो कि इस साल तीन जनवरी को 15 से 18 साल के किशोरों का टीकाकरण शुरू किया गया था। टीकाकरण संबंधी राष्ट्रीय तकनीकी सलाहकार समूह के कोविड-19 कार्यसमूह के अध्यक्ष डा. एनके अरोड़ा ने बताया कि 15 से 18 साल के अनुमानित 7,40,57,000 किशोरों की आबादी में से 3.45 करोड़ से अधिक को अब तक कोविड रोधी वैक्सीन कोवैक्सीन की पहली खुराक दी जा चुकी है। इनको 28 दिनों में दूसरी खुराक दी जानी है। इस आयु वर्ग के किशोर में टीकाकरण को लेकर भारी उत्साह देखा जा रहा है।

ऐसे बढ़ता गया अभियान: बता दें कि 16 जनवरी 2021 को स्वास्थ्य कर्मियों को टीका लगाने के साथ ही देश में टीकाकरण अभियान की शुरूआत हुई थी। यही नहीं दो फरवरी 2021 को फ्रंटलाइन वर्कर को टीका लगाने की शुरूआत हुई। यही नहीं एक मार्च 2021 को 60 साल से अधिक उम्र और गंभीर रोगों से ग्रस्त 45-60 वर्ष के लोगों का टीकाकरण शुरू किया गया था। पिछले साल एक अप्रैल से 45 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों को वैक्सीन दी जानी शुरू की गई थी। पिछले साल एक मई से 18 साल से अधिक उम्र के सभी लोगों का टीकाकरण शुरू हुआ था।

कोरोना टीकाकरण के अहम पड़ाव

मालूम हो कि इस साल 10 जनवरी से स्वास्थ्य कर्मियों, फ्रंटलाइन वर्कर और गंभीर रोगों से ग्रसित 60 साल से अधिक उम्र वालों को सतर्कता डोज देनी शुरू की गई थी। यदि टीकाकरण के अहम पड़ावों पर गौर करें तो पिछले साल एक अप्रैल तक देश में 10 करोड़ डोज लगाई गई थीं। पिछले ही साल 21 अक्टूबर को 100 करोड़ डोज लगाने का आंकड़ा पार किया गया था। इस साल सात जनवरी को 150 करोड़ डोज लगाने का आंकड़ा पार किया गया था।

इन वैक्सीन को दी जा चुकी है मंजूरी

देश में कोरोना के खिलाफ अब तक पांच वैक्सीन के आपात इस्तेमाल को मंजूरी दी जा चुक हैं। सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा उत्पादित कोविशील्ड, भारत बायोटेक द्वारा पूरी तरह से स्वदेशी तौर पर विकसित और उत्पादित कोवैक्सीन और अमेरिकी दवा कंपनी माडर्ना की वैक्सीन शामिल हैं।

ओमिक्रॉन की उल्टी गिनती शुरू: भारतीय वैक्सीन का ह्यूमन ट्रायल जल्द

पुणे

कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन पर पहले से मौजूद कोविड-19 वैक्सीन के असर को लेकर भले ही एक्सपर्ट्स में अलग-अलग तरह की राय है, लेकिन अब खास तौर पर इसी वैरिएंट को निशाना बनाने वाली वैक्सीन भी जल्द आ रही है। खास बात यह है कि ओमिक्रॉन को हराने वाली यह नई वैरिएंट-स्पेसिफिक वैक्सीन भारत में ही बनी है। पुणे की जिनोवा बायोफार्मास्युटिकल्स ने इस नई तरह की वैक्सीन को तैयार किया है और जल्द ही इसके ह्यूमन ट्रायल शुरू होने जा रहे हैं। वैरिएंट-स्पेसिफिक वैक्सीन देश की पहली एमआरएनए टेक्नोलॉजी पर आधारित वैक्सीन है। इससे पहले यही कंपनी कोरोना के अब तक सबसे खतरनाक साबित हुए डेल्टा वैरिएंट के लिए भी ऐसी ही वैरिएंट स्पेसिफिक वैक्सीन बना चुकी है।

कांग्रेस की 'लड़की हूं. लड़ सकती हूं' मुहिम को झटका

सरिता आर्य ने हाथ छोड़ भाजपा में शामिल हुई

देहरादून

कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका वाड्रा की 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं' वाली मुहिम को उत्तराखण्ड में बड़ा झटका लगा है। पार्टी की महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष सरिता आर्य ने हाथ छोड़ भाजपा में शामिल हो गई हैं। दो दिन पहले ही इन्होंने खुलेतौर पर कहा था कि भाजपा यदि टिकट देगी तो मैं पार्टी में शामिल हो जाउंगी। सोमवार को आखिरकार ऐसा ही हुआ। दो दिन पहले सरिता आर्य ने देहरादून में कांग्रेस कार्यालय पर पत्रकारों से कहा था कि अगर कांग्रेस में उनकी अनदेखी हुई और भाजपा उनको टिकट देगी तो कांग्रेस का दामन छोड़ भाजपा का दामन थाम लेंगी। तब ही विधानसभा चुनाव में उनकी नई पारी शुरू करने के कयास लगने लगे थे। पिछले चुनाव में सरिता आर्य कांग्रेस की टिकट पर नैनीताल विधानसभा सीट से चुनाव लड़ी थीं। तब वे भाजपा के संजीव आर्य से चुनाव हार गई थीं। पिछले दिनों संजीव आर्य अपने पिता एवं कैबिनेट मंत्री यशपाल आर्य के साथ भाजपा छोड़ कांग्रेस में वापसी कर गए थे।

लंदन से लौट रही हैं बकरी के सिर वाली योगिनी देवी

नई दिल्ली

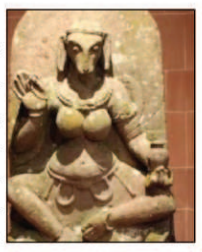

पिछले कुछ सालों में पांचवीं महत्वपूर्ण धरोहर लंदन से योगिनी देवी की मूर्ति के रूप में दिल्ली लौट रही है। बलुआ पत्थर की बनी यह अलग तरह की मूर्ति है जिसमें देवी का सिर बकरी का है। इस मूर्ति को अभी फिलहाल राष्ट्रीय संग्रहालय में स्थान दिए जाने पर विचार किया जा रहा है। इससे पहले भगवान शिव और राम, सीता और लक्ष्मण की मूर्तियां देश वापस लौट चुकी हैं। राम सीता और लक्ष्मण की मूर्तियां दो साल पहले तमिलनाडु सरकार को सौंपी जा चुकी हैं। योगिनी देवी की इस मूर्ति को करीब 40 साल पहले चोरी करके लंदन ले जाया गया था,इस प्राचीन मूर्ति की घर वापसी होने जा रही है। बताया जा रहा है कि मूर्ति को भारत भेजने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

अबू धाबी हवाई अड्डे पर ड्रोन से हमला

अबू धाबी

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की राजधानी अबू धाबी स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हाउदी विद्रोहियों ने हमला कर दिया। इस ड्रोन हमले में दो भारतीयों सहित तीन लोगों की मौत हुई है। हमले से तीन तेल टैंकरों में विस्फोट हुआ और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के मुख्य हवाई अड्डे के विस्तार पटल पर आग लग गयी। यमन के हाउदी विद्रोहियों ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। रिपोर्ट के मुताबिक शुरूआती जांच में यह हमला ड्रोन जैसी छोटी उड़ने वाली वस्तुओं से किया गया प्रतीत होता है। इन ड्रोन की मदद से अबू धाबी के दो स्थानों पर विस्फोट किये गए।

ड्रोन हमले में दो भारतीयों सहित तीन लोगों की मौत हुई है। हमले से तीन तेल टैंकरों में विस्फोट हुआ और यूएई के मुख्य हवाई अड्डे के विस्तार पटल पर आग लग गयी

इनसे अबू धाबी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के एक हिस्से में आग लग गई। साथ ही वहां मौजूद तेल के तीन टैंकरों में भी विस्फोट हुआ। इस घटनाक्रम के बाद हवाई अड्डे के आसपास हड़कंप मच गया। अबू धाबी पुलिस ने मृतकों की पहचान दो भारतीय नागरिकों और एक पाकिस्तानी के तौर की है। घायलों की पहचान नहीं हुई है, जिन्हें मामूली चोट आई हैं। हाउदी विद्रोहियों का मुख्य दुश्मन सऊदी अरब को माना जाता है क्योंकि वह इनके खिलाफ लड़ने के लिए खाड़ी देशों के एक गठबंधन का नेतृत्व कर रहा है।

कथक सम्राट बिरजू महाराज का निधन, पद्म विभूषण से थे सम्मानित

नई दिल्ली

पद्म विभूषण से सम्मानित दुनिया भर में मशहूर कथक नर्तक पंडित बिरजू महाराज का रविवार देर रात निधन हो गया। 83 वर्षीय बिरजू को हार्ट अटैक के बाद अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित

कर दिया। बिरजू महाराज के पोते स्वरांश मिश्रा ने सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी दी है। जानकारी के मुताबिक देर रात उन्हें हार्ट अटैक के बाद दिल्ली के साकेत अस्पताल ले जाया गया जहां लेकिन तब तक उनकी मौत हो गयी। पंडित बिरजू महाराज के निधन से भारतीय कला जगत ने एक दिग्गज कलाकार को खो दिया है। शीर्ष नर्तकों में शुमार बिरजू महाराज ने कथक नृत्य को नया आयाम दिया। कला जगत से जुड़े लोगों ने उनके निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है।

कोरोना काल में अरबपतियों की संख्या में हुआ इजाफा

नई दिल्ली

कोविड-19 महामारी के दौरान जहां एक ओर देश में अरबपतियों की संख्या में इजाफा हुआ है तो दूसरी तरफ गरीबी भी तेजी से बढ़ी है।

गैर सरकारी संगठन ऑक्सफैम इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक साल 2021 में भारत में अरबपतियों की संख्या 39 फीसदी बढ़कर 102 से 142 हो गई। विश्व आर्थिक मंच 2022 के दावोस एजेंडा शिखर सम्मेलन के पहले दिन सोमवार को ऑक्सफैम इंडिया की तरफ से जारी वार्षिक असमानता सर्वे रिपोर्ट के अनुसार कोरोना काल में भारतीय अरबपतियों की कुल संपत्ति दोगुनी हो गई।

पंजाब में अब 20 फरवरी को डाले जाएंगे वोट

चंडीगढ़

पंजाब में मतदान की तारीख में बदलाव, अब 14 फरवरी की बजाय 20 फरवरी को डाले जाएंगे वोट। यह निर्णय सोमवार को चुनाव आयोग की बैठक में किया गया। पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी और विभिन्न राजनीतिक दलों ने मतदान तिथि बदले जाने की मांग की थी। पंजाब में मतदान की तारीख आगे बढ़ा दी गई है। अब 20 फरवरी को मतदान होगा। गुरु रविदास जयंती पर पंजाब के एससी समुदाय के लोग वाराणसी जाते हैं।

इसी कारण मतदान को टालने की मांग तेज हो रही थी। अब पंजाब चुनाव के लिए अधिसूचना 25 जनवरी को जारी होगी। नामांकन पत्र एक फरवरी तक भरे जाएंगे। चार फरवरी तक उम्मीदवारों की फाइनल लिस्ट बन जाएगी। पंजाब में मतदान की तारीख आगे बढ़ाने पर पंजाब कांग्रेस के प्रधान नवजोत सिद्धू ने कहा कि हम पंजाब विधानसभा चुनाव को स्थगित करने के चुनाव आयोग के फैसले का स्वागत करते हैं। इससे पहले मुख्यमंत्री चरणजीत चन्नी ने चुनाव आयोग से पंजाब में मतदान छह दिन टालने की मांग की थी। इसके बाद भारतीय जनता पार्टी और पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने भी रविवार को चुनाव आयोग को पत्र लिखकर मतदान टालने की मांग की।

नड्डा, शाह ने उम्मीदवारों के नाम पर की चर्चा

उत्तर प्रदेश के सीएम योगी भी बैठक में शामिल

नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अध्यक्ष जे पी नड्डा ने उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर विधानसभा चुनाव के मद्देनजर पार्टी नेताओं के साथ बैठक की। कोरोना संक्रमण से उबरने के बाद नड्डा सोमवार को पहली बार भाजपा मुख्यालय पहुंचे। भाजपा मुख्यालय में चुनावी राज्यों और उम्मीदवारों के मुद्दे पर हुयी बैठक में नड्डा के साथ केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, महासचिव (संगठन) बीएल संतोष, महासचिव अरूण सिंह समेत कई प्रमुख नेता शामिल रहे। पंजाब के चुनाव सह प्रभारी व केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी, राज्य प्रभारी दुष्यंत गौतम समेत अन्य नेताओं ने सूबे में उम्मीदवारों के चयन के मुद्दे पर भाजपा अध्यक्ष से विचार-विमर्श किया। सूत्रों के मुताबिक, उत्तराखंड के चुनाव प्रभारी प्रह्लाद जोशी ने भी राज्य के उम्मीदवारों पर चर्चा की। बताया जा रहा कि राज्य मंत्रिमंडल से कैबिनेट मंत्री हरक सिंह रावत के निकाले जाने के बाद की स्थिति पर भी बैठक में चर्चा हुई। दोपहर बाद बैठक में हिस्सा लेने के लिये उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी भाजपा मुख्यालय पहुंचे। उनके साथ केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल भी थे। समझा जा रहा कि इस बैठक में उत्तर प्रदेश के दूसरे चरण के बाद के मतदान के लिये उम्मीदवारों के नाम पर चर्चा की गई। उल्लेखनीय है कि भाजपा ने गत शनिवार को पहले और दूसरे चरण के मतदान के लिये 105 सीटों पर उम्मीदवारों के नाम घोषित किये हैं। इसके अलावा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के विधानसभा सीटों की भी घोषणा कर दी गई है।

सीमा पार से या तो जमीन के जरिए या समुद्री मार्ग से पाकिस्तानी डीप स्टेट द्वारा स्थानीय आतंकवादियों को भेजा गया था

पाक से भेजे गए 24 बमों में से एक था गाजीपुर में मिला

नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस की जांच में पता चला है कि गाजीपुर फूल बाजार से बरामद किए गए आईईडी 24 बमों की खेप का हिस्सा था, जिसे सीमा पार से या तो जमीन के जरिए या समुद्री मार्ग से पाकिस्तानी डीप स्टेट द्वारा स्थानीय आतंकवादियों को भेजा गया था। हाल ही में जम्मू-कश्मीर और पंजाब से बरामद की गईं डिवाइसेज को भी उसी खेप का हिस्सा माना जा रहा है। यह भी माना जा रहा है कि कुछ उपकरणों की तस्करी गुजरात और उत्तर प्रदेश में की गई हो सकती है। दिल्ली पुलिस के टॉप जांचकर्ताओं के मुताबिक, गाजीपुर डिवाइस एक टिफिन बम था जिसमें तीन किलोग्राम आरडीएक्स कोर चार्ज के रूप में और अमोनियम नाइट्रेट सेकेंडरी चार्ज के

तौर पर था। डिवाइस को स्टील के टिफिन में कीलों और बॉल बेयरिंग के साथ पैक किया गया था और इसे दूर से ही उड़ाया जा सकता था।

भारत में मौजूद स्लीपर मॉड्यूल के लिए सीमा पार से तस्करी: इन आईईडी को भारत में मौजूदा स्लीपर मॉड्यूल के साथ-साथ कुछ आपराधिक गिरोहों के लिए सीमा पार से तस्करी कर लाया गया था। सितंबर 2021 में दिल्ली पुलिस ने मुंबई, लखनऊ, इलाहाबाद और दिल्ली में गिरफ्तारियों के साथ आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया, जिसे इस आईईडी रिकवरी से जोड़ा गया है।

आईईडी खेप पिछले स्वतंत्रता दिवस के आसपास भारत आई: जांचकर्ताओं का मानना है कि आईईडी की खेप पिछले स्वतंत्रता दिवस के आसपास भारत आई थी। जबकि दिल्ली पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां खेप से अन्य आईईडी बरामद करने की कोशिश कर रही हैं। एचटी को पता चला है कि इनमें से कई आईईडी को समुद्री मार्ग से गुजरात और जमीनी रास्ते से यूपी भेजा गया है।

नेपाल ने फिर तरेरी आंखें

काठमांडू

भारतीय राज्य उत्तराखंड के लिपुलेख में सड़क चौड़ीकरण के मसले पर अब नेपाल सरकार ने आंखें तरेरी हैं। नेपाल के सूचना एवं प्रसारण मंत्री ज्ञानेंद्र बहादुर कार्की ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा के अनुरूप लिपुलेख में सड़क चौड़ीकरण पर विरोध दर्ज कराया है। कार्की ने कहा है कि काली नदी का पूर्वी इलाका लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और कालापानी नेपाल के अभिन्न हिस्से हैं और उस इलाके में भारत को किसी तरह का निर्माण नहीं करना चाहिए। सीमा विवाद का हल ऐतिहासिक दस्तावेजों, नक्शों व साक्ष्यों के आधार पर दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों की भावना को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

खबर संक्षेप

बेटियां सौभाग्य से प्राप्त होती हैं : डा. अस्मिता सिंह

जसरा। बेटियों से ही घरों मे रौनक आती हैं बिन बेटियों के समाज एवम आँगन सूना होता हैं। बेटियों कों समान शिक्षा एवम अवसर प्रदान करने की आवश्यकता हैं क्योंकि एक बेटी के शिक्षित होनें से दो पीढ़ियां शिक्षित होती हैं उक्त बातें केंद्रीय इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डा अस्मिता सिंह क्षेत्र के बसवार मे आयोजित दिशा फाउंडेशन के नेतृत्व मे महिला सशक्तिकरण एवम बेटी बचाओं -बेटी पढ़ाओं अभियान मे आयोजित परिचर्चा के दौरान बतौर मुख्य वक्ता के रूप मे बोल रहीं थी।इस अवसर पर 100से अधिक बेटियों कों निःशुल्क कापी, बैग वितरित करते हुए मुख्य अतिथि डा अस्मिता सिंह यह भी बोलीं कि आगामी गणतंत्र दिवस पर कौंधियारा क्षेत्र के बी एल यादव इंटर कालेज मे दिशा फाउंडेशन के तत्वाधान मे दो लाख चालीस हजार की राशि का दो कमरों का चेक, सोलर सहित बेटियों कों कापी बैग वितरित करेंगी इस अवसर पर डा अस्मिता सिंह ने सभी लोगों से शिरकत करने की भी अपील की। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक सिंह पटेल अध्यक्षता छात्रनेत्री गरिमा उपाध्याय ने किया। डा नीतू चंद्रा, डा हेमलता, डा माधुरी कौशल आदि लोगों ने सभा कों सम्बोधित किया।

ड्यूटी पर तैनात सिपाही की मार्ग दुर्घटना से मौत

अखंड भारत संदेश

सहसों। थाना सराय इनायत के पुलिस चौकी सहसों में तैनात सिपाही की सोमवार की सुबह तड़के लगभग 7 बजे मार्ग दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल घायल व इलाज के दौरान अंतिम सांस ली। जानकारी के अनुसार जनपद गाजीपुर के भदौरा गांव, थाना गहमर निवासी मुनीष कुमार चौबे 45 वर्ष पुत्र स्वर्गीय वशिष्ठ नारायण चौबे लगभग तीन माह पूर्व पुलिस लाइन से थाना सराय इनायत में तैनात हुए थे। वर्तमान में सहसों पुलिस चौकी में कार्यरत रहे। प्रत्यक्षदर्शी तथा पुलिस की अनुसार

सोमवार की सुबह गश्त ड्यूटी के दौरान फूलपुर की तरफ से प्रयागराज जा रही तेज गति पिकअप ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गये।मौके पर पहुंचे सहसों चौकी के सिपाही एवं पीआरबी ने तत्काल इलाज के लिए एसआरएन प्रयागराज ले गए जहां पर इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। मुनीष कुमार चौबे की मौत से सहसों

मृतक सिपाही मुनीष कुमार चौबे (फाइल फोटो)

पुलिस चौकी सहित थाना सराय इनायत के समस्त कर्मचारी स्तब्ध एवं दुखी हुआ है। उनकी मौत की सूचना उनके परिजनों को भी दे दी गई। परिजन भी रोते बिलखते एसआरएन अस्पताल प्रयागराज पहुंचे गए। मृतक सिपाही की लाश को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों के मौजूदगी में पुलिस के आला अधिकारी रसूलाबाद घाट पर पहुंचकर अंतिम संस्कार किया।

जसरा में अज्ञात वृद्धा ने ट्रेन से कट कर दी जान

जसरा। जसरा रेलवे क्रॉसिंग के समीप एक अज्ञात वृद्धा घर वालों से परेशान होकर जान दे दी। रेल पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। सोमवार को सुबह एक अज्ञात वृद्धा हाथ में छड़ी के सहारे रेलवे लाइन के बगल बगल जा रही थी। रेलवे लाइन के बगल स्थित घरों कि कुछ महिलाओं ने वृद्धा को रेल लाइन पर चलने से मना किया तथा उसे किनारे की ओर ले आए। महिलाओं ने बताया कि अज्ञात वृद्धा ने बताया कि उसके घर वालों ने उसका सामान घर से बाहर फेंक दिया तथा उसे घर से निकाल दिया है। जिससे वह परेशान होकर जान देने के लिए आई है। महिलाओं ने उसे बहुत समझाया लेकिन वह मौका पाकर एक बार फिर रेल की पटरी के बगल बगल आगे की ओर बढ़ गई तथा थोड़ी दूर जाकर प्रयागराज की ओर जा रही एक मालगाड़ी के सामने लेट गई। ट्रेन से कट जाने के कारण उसकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पहुंची रेलवे पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अज्ञात में पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

जमीनी विवाद में हुआ दो पक्षों में मारपीट, एक की हालत नाजुक

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र के गेदुराही गांव में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में मारपीट हो गई जिससे एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया जबकि दूसरे पक्ष को भी मामूली रूप से चोट लगी है। जिसका अस्पताल में इलाज चल रहा है। मिली जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गेदुराही गांव मे अंबिका दुबे व राधिका श्रीवास्तव के बीच जमीनी विवाद था। सोमवार को दोनों पक्षों में जमीनी विवाद को लेकर आपस में कहासुनी हो गई कुछ ही देर में कहासुनी मारपीट में बदल गई। जिससे अंबिका दुबे व राधिका श्रीवास्तव के बीच लाठी डंडों से मारपीट हो गई। मारपीट मे राधिका श्रीवास्तव को चोट लगी है और अम्बिका दुबे के पक्ष के एक व्यक्ति को मामूली चोट लगी है। सीएचसी मेजा मे घायलों इलाज हुआ। सूचना पर मेजा पुलिस पहुंचकर मामले की जानकारी ली। दरोगा अतुल मिश्रा ने बताया कि मारपीट में दोनों पक्षों के एक एक व्यक्ति को चोट लगी है और दोनों का उपचार हुआ। पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ शांति भंग की कार्रवाई किया।

न्यूज झरोखा

कांग्रेस कार्यकताओं ने लगाई चौपाल

सहसों। कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद के नेतृत्व में सोमवार को ग्राम सभा बेलवा एवं रामनगर मे एक चौपाल आयोजित किया गया। चौपाल में प्रियंका गांधी द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम को लोगों में समझाया बताया गया उनके संकल्प प्रतिज्ञा के बारे में और जनहित में किए जाने वाले कार्यों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। प्रदेश में बिगड़ती हुई कानून व्यवस्था भ्रष्टाचार महंगाई और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, किसानों और मजदूरों की समस्याओं के बारे में जनता को यह बताया गया कि कांग्रेस पार्टी के सत्ता में आने के बाद पार्टी के दिए गए संकल्प को अवश्य पूरा करेगी। कार्यक्रम में उपस्थित प्रमुख लोगों में कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता एडवोकेट देवराज उपाध्याय , महताब प्रधान, सलीम टाइगर, बबलू प्रधान, पुष्पराज सिंह, शकील अहमद, दिनेश कुमार गौतम , शफीक हाफिज, दुर्गेश कुमार, पुरुषोत्तम लाल, राजेश कुमार , गोविन्द सिंह , फिरोज अहमद, राजा बाबू , अजय कुमार गुप्ता, व कमलेश सिंह सहित आदि रहे।

कोरोना को हराने में वैक्सीन अहम : राजेश जायसवाल

जसरा। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी की तीसरी लहर से बचाव हेतु 15 वर्ष से 18 वर्ष के किशोरों को वैक्सीन लगायी जा रही है। क्षेत्र के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों मे छात्र एवम छात्राएं बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। इसी क्रम में जसरा के जीजीआईसी इण्टर कालेज में वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजित किया गया। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता और समाजसेवी राजेश जायसवाल ने कहा कि कोरोना को हराने के लिए मास्क, साबुन एवम वैक्सीन की भूमिका काफी अहम है। इसलिए जिन विद्यार्थियों को वैक्सीन नहीं लग पायी है, वह सभी छूटे हुए बच्चे अगले कार्य दिवस एवम स्थानीय सरकारी अस्पताल में वैक्सीन लगवा सकते हैं। श्री जायसवाल ने सभी विद्यार्थियों को कोरोना काल में भी मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए यह भी कहा की युवाओं एवम छात्रों के मजबूत कंधो पर भी आने वाले कल की सारी रुपरेखा रेखा निर्भर है। इसलिए छात्र, नौजवान ही इस देश का कायाकल्प कर सकते हैं। श्री जायसवाल ने आये हुए अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए वैक्सीन लगाने वाली टीम का आभार प्रकट किया। उक्त अवसर पर विद्यालय के शिक्षक एवम शिक्षिकाओं सहित वैक्सीन लगवाने वाली छात्राएं उपस्थित रहीं।

अमृतेश कुमार बने समाजवादी व्यापार सभा के जिला उपाध्यक्ष

जसरा। विकास खंड जसरा के ब्यवसायी अमृतेश कुमार केसरवानी उर्फ मुन्ना भैया को समाजवादी ब्यापार सभा का जिला उपाध्यक्ष बनाया गया है। उक्त आशय की जानकारी संगठन के जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार केसरवानी ने दी है। मुन्ना भैया के मनोनयन को लेकर पार्टी कार्यकताओं व स्थानीय ब्यापारियों ने उन्हें बधाई दी है। बधाई देने वालों में शशी केसरवानी, बबलू डंडा, अमित कुमार, सुभाष चंद्र शुक्ल सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

अमित कुशवाहा शाखा अध्यक्ष व अनिल मिश्रा वर्कर्स यूनियन के शाखा मंत्री चुने गए

वर्कर्स यूनियन मैकेनिकल शाखा का चुनाव सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नार्थ सेन्ट्रल रेलवे वर्कर्स यूनियन प्रयागराज मण्डल के मैकेनिकल शाखा का चुनाव प्रवेक्षक केन्द्रीय कोषध्यक्ष कॉमरेड संजय तिवारी और चुनाव अधिकारी संगठन के केन्द्रीय सहायक महामंत्री सैय्यद इरफात अली व मण्डल संगठन मंत्री सैय्यद आफताब अहमद की देख रेख में संपन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से शाखा अध्यक्ष कॉमरेड अमित कुमार कुशवाहा, कार्यकारी शाखाध्यक्षका,सुनील आर्यन, शाखा उपाध्यक्ष का. विमल कनौजिया, का. प्रदीप कुमार सिंह, का. जितेन्द्र कुमार।विश्वकर्मा, का. सन्तोष कुमार वर्मा, शाखा मंत्रीका. अनिल कुमार मिश्रा, संयुक्त शाखा मंत्री का. इफ्तेखार अहमद, सहायक शाखा मंत्री का. चन्द्रेश्वर सिंह, का. जितेन्द्र पाठक, का.दुखंती प्रसाद, का. कुन्दन लाल , शाखा संगठन मंत्री का. सुनील गुप्ता, शाखा कोषाध्यक्ष का. आर. ए. रिजवी, शाखा मीडिया प्रभारीका.अमित कनौजिया, युवा शाखा संयोजकका. पी. सी. पाल, युवा शाखा सह संयोजक का. शफात उल्ला, का. रवि कुमार, एन.पी. एस. शाखा संयोजक का.अजीत कुमार सिंह, सह संयोजक का. रामानन्द मौर्या, सी.सी.मेम्बर का. राज कुमार, का. शमशेर आलम,

वर्कर्स यूनियन मैकेनिकल शाखा के चुने गये पदाधिकारी

का. अमित रंजन, का. संदीप श्रीवास्तव, का. अमित राय, ए. जी. मेम्बर का. तौहीद आलम, का. अब्दुल्ला सिद्दीकी,का. विजय यादव, का. सुनील कुमार सिंह, का. सैय्यद शोएब अशरफ, का. प्रवेश तिवारी, का. मासूद अहमद, गौरव जयसवाल,को चुना गया। नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए नार्थ सेन्ट्रल रेलवे वर्कर्स यूनियन के महामंत्री कॉमरेड मनोज पाण्डेय ने कहा कि कोविड नियमों का पालन करते हुए वर्कर्स यूनियन कर्मचारियों के हितों की लड़ाई लड़ने के लिए कटिबद्ध है। इरेफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष कॉमरेड मनोज ने कहा कि गुड्स गार्ड को ट्रेन मैनेजर के रूप में इनिशियल रोल 4200जी.पी. दिलाना था लेकिन ट्रेन मैनेजर कहलाने का श्रेय लेने वाले मान्यता प्राप्त फेडरेशन ने रेल प्रशासन से 1900जी.पी. पर सौदा कर लिया जो निन्दनीय है।

डेढ़ दर्जन पुलिसकर्मियों के किये गये तबादले

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। एसएसपी ने विधानसभा चुनाव से पहले डेढ़ दर्जन से ज्यादा उपनिरीक्षकों को नई तैनाती दी। बता दें कि सोमवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज अजय कुमार ने विधानसभा चुनाव सकुशल सम्पन्न कराने को लेकर तैयारियों को देखते हुए थानों पर उपनिरीक्षकों की कमी को देखते हुए डेढ़ दर्जन से ज्यादा उपनिरीक्षकों को थानों पर तैनाती दी है। दरोगा कीरत कुमार को पुलिस लाइन से थाना खीरी, दरोगा राजेश कुमार सचान को पुलिस लाइन से थाना बारा, दरोगा प्रदीप कुमार को पुलिस लाइन से थाना शंकरगढ़, दरोगा गया प्रसाद यादव को पुलिस लाइन से थाना शंकरगढ़, दरोगा प्रभु दयाल दुबे को पुलिस लाइन से थाना शंकरगढ़, दरोगा जगत प्रसाद को पुलिस लाइन से थाना कौंधियारा, दरोगा बलवान सिंह को पुलिस लाइन से थाना लालापुर, दरोगा रणजीत सिंह को पुलिस लाइन से थाना लालापुर, दरोगा आशुतोष त्रिपाठी को पुलिस लाइन से थाना लालापुर, दरोगा अजीत सिंह को पुलिस लाइन से थाना फाफामऊ, दरोगा प्रवेश कुमार को पुलिस लाइन से थाना शंकरगढ़, दरोगा दर्शन लाल को पुलिस लाइन से थाना करछना, दरोगा अमरेन्द्र सिंह को पुलिस लाइन से थाना शंकरगढ़, दरोगा रवि कुमार शर्मा को पुलिस लाइन से थाना कौंधियारा, दरोगा ओमनारायण को पुलिस लाइन से थाना खीरी, दरोगा सुभाष कुमार गौतम को पुलिस लाइन से थाना फूलपुर, दरोगा बृजेश कुमार यादव को थाना सिविल लाइन से थाना फाफामऊ, दरोगा जनमेजय कुमार को थाना सोरांव से थाना करछना, दरोगा विवेक कुमार को थाना झूंसी से थाना शंकरगढ़, दरोगा राजेश कुमार वर्मा को थाना नैनी से थाना फूलपुर स्थानांतरित किया गया।

नेहरू युवा केंद्र द्वारा मतदाता जागरूकता एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम आयोजित

शिक्षण संस्थान में जागरूक करतीं जिला परियोजना अधिकारी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नेहरू युवा केंद्र प्रयागराज द्वारा सोमवार को विकासखंड श्रृंगवेरपुर , गांव आनापुर मे शिक्षण संस्थान जी पी एस मे युवा सप्ताह के अंतर्गत सामाजिक सेवा दिवस आयोजन किया गया।कार्यक्रम में जिला परियजना अधिकारी एषा सिंह ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर जन जागरूकता की।जिसमें उन्होंने बढ़ते प्रदूषण से होने वाली हानियों से सभी को अवगत कराया । तथा ज्यादा से ज्यादा पौधारोपण करने के लिए प्रेरित किया। इसी कड़ी में उपस्थित सभी युवाओं को सु०?यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचक सहभागिता कार्यक्रम (स्वीप) के तहत मत देने और जागरूक निर्णय लेने के साथ भारत में सही मायनों में सहभागी लोकतंत्र का निर्माण करने हेतु सभी को प्रेरित किया। कार्यक्रम में शिक्षण संस्थान के निदेशक गुलाब शुक्ला का अहम योगदान रहा। सभी युवाओं ने पर्यावरण विषय पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। टॉप 3 विजेताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। शिक्षक अवनीश मिश्रा, रमाकांत, अमित कुमार की खास मौजूदगी। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक कुलदीप, हिमांशु, सूरज का अहम योगदान रहा। कार्यक्रम का आयोजन जिला युवा अधिकारी जागृति पांडे के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

बहुजन नाट्य कार्यशाला का आयोजन 01 फरवरी से

प्रयागराज। प्रबुद्ध फाउंडेशन और डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन (दावा) के संयुक्त तत्वावधान में बहुजन साहित्य कला और संस्कृति के साथ साथ बहुजन रंगमंच के विकास संरक्षण सम्बर्धन एवं उसके पुनर्स्थापत्य के लिये एक पन्द्रह दिवसीय शीतकालीन प्रस्तुतिपरक बहुजन नाट्य कार्यशाला का आयोजन आगामी दिनाक 01-15 फरवरी 2022 तक दोपहर 12 बजे से अपराह्न 04 बजे तक ग्लास फैक्ट्री पंतरवा स्थित डा. भीमराव अम्बेडकर बुद्ध विहार प्रयागराज के सभाकक्ष में किया जा रहा है। प्रस्तुतिपरक शीतकालीन बहुजन नाट्य कार्यशाला में चयन एक साक्षात्कार के आधार पर किया जाएगा। बहुजन रंगमंच से जुड़ने के लिये इक्छुक युवक/ युवतियां जिनकी उम्र 18 से 30 वर्ष के मध्य हो 31 जनवरी तक उपस्थित होकर साक्षात्कार दे सकते है। इस पन्द्रह दिवसीय शीतकालीन प्रस्तुतिपरक बहुजन नाट्य कार्यशाला का निर्देशन रंग निर्देशक उच्च न्यायालय के अधिवक्ता बहुजन समाज पार्टी के पूर्व मण्डल सेक्टर प्राभारी रामबृज गौतम के द्वारा किया जाएगा।

भाजपा मे मचे भगदड़ ने साबित कर दिया कि जनता सपा के साथ : नरेन्द्र सिंह

जनता है तैयार बनाने अखिलेश की सरकार : नरेन्द्र सिंह

अखंड भारत संदेश

मेजा। कोविड गाइडलाइंस का पालन करते हुए भी अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिए एक.एक लोंगो से अपनी बात रखना भी एक तरीका है। सोमवार को समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह ने मेजा क्षेत्र के दर्जनों लोंगो से मुलाकात करके चुनाव मे सपा के पक्ष मे समर्थन माँगते हुए अखिलेश यादव की सरकार बनाने के लिये अनुरोध किया।

बातचीत मे नरेन्द्र सिंह ने कहा कि भाजपा मे मचे भगदड़ ने यह साबित कर दिया कि जनता सरकार के विरूद्ध आक्रोशित है और पूर्व की सपा सरकार की योजनाओं को याद करते हुए सपा का साथ देना चाहती है। नरेन्द्र सिंह ने यह भी कहा कि सपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी के विजय रथ यात्राओं मे उमड़ते जन सैलाब ने यह भी बता दिया कि यूपी की जनता अखिलेश यादव की सरकार बनाने के लिये तैयार भी है और उत्साहित भी है। इस क्रम मे सपा प्रदेश सचिव ने सभी से अभी से अखिलेश यादव एवं साइकिल के पक्ष मे

मेजा क्षेत्र में लोगों से मुलाकात करते नरेन्द्र सिंह

प्रचार मे जुट जाने की अपील भी किया। इसमे प्रमुख रूप से शिवानन्द शुक्लए माया प्रताप सिंहए रवि निषाद एडवोकेटए अशर्फी पालए फिरोज खानए अरविंद यादवए राजन शर्माए सर्वेश सिंहए विजय बहादुर कुश्वाहाए अमरेश यादवए गणेश सिंहए संजय बिन्द आदि शामिल रहे।

सीएमपी में कल से स्नातक में ऑनलाइन प्रवेश

प्रयागराज। सीएमपी डिग्री कॉलेज में 19 जनवरी से स्नातक में प्रवेश की प्रक्रिया फिर शुरू होने जा रही है। हालांकि इस बार प्रवेश ऑनलाइन लिए जाएंगे। इसके लिए कॉलेज प्रशासन ने कटऑफ जारी कर दिए हैं। वहीं, विभिन्न विषयों में पीजी प्रवेश के लिए भी कटऑफ जारी किए गए हैं। सीएमपी डिग्री कॉलेज में इस बार ऑफलाइन प्रवेश लिए जा रहे थे, लेकिन कोविड के कारण महाविद्यालय बंद हो गए और प्रवेश प्रक्रिया ठप हो गई। ऐसे में कॉलेज प्रशासन ने पहले परास्नातक में ऑनलाइन प्रवेश शुरू किए और स्नातक में 19 जनवरी से ऑनलाइन प्रवेश शुरू करने का निर्णय लिया है। सीएमपी डिग्री कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बृजेश कुमार के अनुसार बीए में ईडब्ल्यूएस वर्ग में 134 या अधिक अंक, एससी वर्ग में 130 या अधिक अंक पाने वाले एवं एसटी वर्ग के सभी अभ्यर्थी 19 जनवरी को ऑनलाइन प्रवेश ले सकते हैं।वहीं, बीएससी एवं बीकॉम में एसटी की सीटों को एससी में परिवर्तित कर दिया गया है। बीएससी जीव विज्ञान में एससी वर्ग में 83 या अधिक अंक, बीएससी गणित में एससी वर्ग में 108.30 या अधिक अंक और बीकॉम में एससी वर्ग में 67 या या अधिक अंक पाने वाले अभ्यर्थी ऑनलाइन प्रवेश ले सकते हैं।

अंगूठा लगवाने के बाद भी कोटेदार नहीं दे रहा खाद्यान्न

रत्योरा करपिया गांव का मामला डीही गांव में अटैच है राशन की दुकान, कोटेदार बंदना कुशवाहा के पति प्रधान बनने पर अटैच हुआ है कोटा

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। विकासखंड कोरांव के रत्योरा करपिया गांव के राशन कार्ड धारकों ने अटैच डीही के कोटेदार पर अंगूठा लगवाने के बाद राशन न देने की धांधली सामने आई ग्रामीणों के बात पर गौर करें तो पिछले महीने में भी सैकड़ों राशन कार्ड धारकों का अंगूठा लगवाने के बाद कोटेदार द्वारा गल्ला नहीं दिया गया था। इस महीने में भी यही रवैया अपना लिया है। जिससे ग्रामीणों में आक्रोश देखा जा रहा है। सूचना पर मौके कोरांव थाना पुलिस ने कार्डधारकों को समझा बुझाकर शाम को वापस भेज दिया। ज्ञातव्य हो कि रत्योरा करपिया की कोटेदार रही वंदना कुशवाहा के पति शशीकांत कुशवाहा को ग्राम प्रधान बनने पर राशन की दुकान डीही ग्राम पंचायत के राशन की दुकान से अटैच कर दी गई थी। जिसके बाद कई महीने से लगातार ग्रामीण अंगूठा लगवाने

के बाद राशन न देने की शिकायत कर रहे हैं। किंतु विभागीय अफसर कान में तेल डाले बैठे हुए हैं। सोमवार को ग्रामीण राशन कार्ड धारकों के मुताबिक राशनकार्ड की दुकान के गोदाम में राशन भी नहीं बचा हुआ है। ग्रामीणों ने कोटेदार पर राशन की कालाबाजारी कर लेने का आरोप लगाया है। कोटेदार सरपंच पर लगातार इस तरह के आरोप लग रहे हैं। ग्रामीणों की माने तो दो गांवों का राशन वितरण करने वाला कोटेदार रत्योरा करपिया के राशन कार्ड धारकों का राशन कोटेदार प्रत्येक महीने नहीं दे रहा है। जिससे राशन कार्ड धारक परेशान हैं।

कोटेदार का चयन होने के बाद भी नहीं हो रही उठान

ग्राम पंचायत रत्योरा करपिया में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान का आवंटन होने के बाद भी विभागीय अधिकारियों की मिलीभगत से चयनित कोटेदार के खाद्यान्न का उठान नहीं होने दिया जा रहा है। जिससे गरीब राशन कार्ड धारकों का हक मारा जा रहा है। ग्राम प्रधान एवं ग्रामीणों ने चयनित कोटेदार को शीघ्र बहाल करते हुए अगले महीने से राशन उठान कराने की मांग की है।

पुरानी रंजिश में दबंगों ने पत्रकार को पीटा, पुलिस से शिकायत

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। एक तरफ प्रदेश की योगी सरकार पत्रकारों की सुरक्षा को लेकर बड़े-बड़े दावे करती हैं लेकिन पत्रकारों का उत्पीड़न बढ़ता ही जा रहा है प्रदेश में लगातार पत्रकारों के साथ मारपीट की घटनाएं बढ़ती जा रही है ! कहते हैं पत्रकार भीड़ का हिस्सा नहीं होता लेकिन जब किसी पत्रकार के साथ अभद्रता की जाती है या फिर किसी दबंग द्वारा पत्रकार को निशाना बनाकर मारपीट की जाती है,तब पुलिस पत्रकारों के साथ सौतेला व्यवहार करती है। ऐसा ही मामला जनपद प्रयागराज के मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक हिंदी दैनिक समाचार पत्र में काम करने वाले पत्रकार सुरेश मौर्य को पुरानी रंजिश के चलते दबंगों ने जमकर मारा पीटा है और पीड़ित पत्रकार सुरेश मौर्य 10,000 नकदी भी छीन ले गए आपको बता दें यह पूरा मामला मऊआइमा थाना क्षेत्र के रहने वाले सुरेश मौर्य निवासी ग्राम घीनपुर थाना मऊआइमा ने बताया कि मैं अपने घर से 10,000 रुपया नगद पैसा लेकर बैंक में जमा करने जा रहा था इसी बीच पुरानी रंजिश को लेकर रास्ते में पहले से घात लगाए बैठे राजकुमार व बच्चा पुत्र कालूराम ,अशर्फी पुत्र राजकुमार विश्वकर्मा निवासी ग्राम गोवर्धनपुर थाना मऊआइमा ने जबरन रोककर प्रार्थी को भद्दी भद्दी गालियां देते हुए मारने लगे प्रार्थी से ?10000 नगदी भी छीन लिए और धमकी देते हुए बोले कि कहीं इसकी शिकायत करोगे तो तुम्हें जान से मार देंगे जिससे पीड़ित पत्रकार सुरेश मौर्य काफी डरा सहमा है वही पीड़ित पत्रकार सुरेश मौर्य ने दबंगों के खिलाफ मऊआइमा थाने में लिखित शिकायत करते हुए मुकदमा पंजीकृत कर दंडात्मक कार्रवाई की मांग की है जिसके चलते पत्रकारों में आक्रोश व्याप्त है।

खबर संक्षेप

सपा एवं प्रगतिशील समाज वादी की बैठक

कोराव। भावी विधायक रामकृपाल सपा के नेतृत्व मे आज प्रसपा विधानसभा अध्यक्ष के आवास पे बैठक हुई। जिसमे चुनाव जितने वाले समीकरण पे चर्चा हुई,। और बूथ लेबल पे भी चर्चा हुई, और समस्त लोगो ने अपने अपने विचार प्रकट किये। जिसमे समाजवादी पार्टी के विधानसभा अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश सिंह, प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के विधानसभा अध्यक्ष लक्ष्मी शंकर यादव, विधानसभा उपाध्यक्ष यादवेन्द्र यादव सपा, लोहिया वाहिनी प्रसपा के प्रकोष्ठ अध्यक्ष धर्मवीर कुशवाहा आदि प्रमुख सम्मानित व सम्भ्रांत लोग सम्मलित हुए थे।

जिलाधिकारी ने किया नामांकन कक्षों सहित मुण्डेरा मंडी स्थित स्ट्रांग रूम का निरीक्षण

नामांकन कक्षों में सभी आवश्यक व्यवस्थायें करने के दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी संजय कुमार खत्री ने सोमवार को विधान सभा सामान्य निर्वाचन-2022 की तैयारियों के संदर्भ में विधानसभा के नामांकन कक्षों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने उप निर्वाचन अधिकारी/ एडीएम प्रशासन को कक्षों में साफ-सफाई, पोताई, प्रकाश की व्यवस्था सहित सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को कराये जाने के लिए कहा है। इसी क्रम में उन्होंने तहसील सदर का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने फाइलों को व्यवस्थित ढंग से रखने का निर्देश दिया साथ ही निर्वाचन से सम्बंधित रजिस्टरों का भी निरीक्षण किया। तत्क्रम में जिलाधिकारी ने मुण्डेरा मंडी स्थित स्ट्रांग रूम के कक्षों का भी निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने मतगणना हॉलों को चयनित किये जाने के लए नीलामी चबुतरों का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने साफ-सफाई तथा जिन कक्षों में रंगाई-पोताई की जरूरत है, वहां पर रंगाई-पोताई का कार्य कराये जाने के लिए कहा है तथा पीडब्लूडी के अधिशाषी अभियंता को निर्देशित किया है कि विधानसभा वार मैप बनाकर दो दिनों के अंदर प्रस्तुत करने के लिए कहा है। इस अवसर पर एडीएम प्रशासन श्री हर्षदेव पाण्डेय सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

निरीक्षण करते जिलाधिकारी

पौष पूर्णिमा पर संगम में स्नान करते श्रद्धालु

पौष पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

बर्फीली हवाओं के बीच कल्पवासियों ने लगाई संगम में डुबकी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। माघ मेले के दूसरे सबसे बड़े स्नान पर्व पौष पूर्णिमा पर सोमवार की भोर से ही संगम पर आस्था की डुबकी लगने लगी। न बर्फीली हवाएं आस्था के कदमों को डिगा सकीं ना कोरोना संक्रमण का खौफ। छह डिग्री सेल्सियस तक लुढ़के पारे के बीच उत्साह से हर हर बम बम करते सिर पर आस्था की गठरी लिए श्रद्धालु संगम की ओर बढ़ते रहे।कंपकंपी छुड़ा देने वाली ठंड के बीच पौष पूर्णिमा पर त्रिवेणी संगम तट पर देश के कोने-कोने से आए श्रद्धालुओं ने पुण्य की डुबकी लगाई। न ठिठुरन की चिंता और ना ही किसी चेहरे पर कोरोना संक्रमण का गम। आस्था के रंग में रंगे संतों-भक्तों ने पतितपावनी गंगा के दोनों तटों पर स्नान के साथ हीअन्न, वस्त्र का दान किया। कहीं जयकारे गूंजते रहे तो कहीं दीयों की लौ जलाकर मंगलकामनाएं की जाती रहीं। अरैल, झूंसी के अलावा रामघाट, काली घाट, दशाश्व मेध घाट के अलावा मेला क्षेत्र में सेक्टर वाइज बने 12 घाटों पर देर शाम तक संतों-भक्तों और कल्प वसियों ने पुण्य की डुबकी लगाई। त्रिवेणी की धारा में गोता लगाकर पुण्य कमाने की होड़ में युवा भी शामिल रहे। कल्प वासियों, श्रद्धालुओं की भीड़ तो उमड़ी ही, संतों की टोलियां भी स्नान के लिए दिन भर संगम पहुंचती रहीं।कोई लेटते हुए तो कोई बाजेगाजे के साथ डुबकी लगाने पहुंचा। पौ फटने के साथ ही संगम केतट पर गठरी, झोला, कपड़ा रखने और सहेजने की चिंता हर तरफ दिखाई देने लगी। लाल मार्ग, काली मार्ग और त्रिवेणी मार्ग के अलावा गंगा पर बने पांटून पुलों कल्पवासियों की लाइनें लगी रहीं। स्नान घाटों हर श्रद्धालु के माथे पर तिलक-त्रिपुंड लगाने वाले पुरोहित भी भक्ति भाव का संचार करते रहे।

शुभ मुहूर्त में कल्प वासियों ने पूजा कर शुरू किए कल्पवास

पौष पूर्णिमा पर संगम की रेती में कल्पवास शुरू...

प्रयागराज। माघ मेले के दूसरे स्नान पर्व पौष पूर्णिमा से गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर कल्पवास शुरू हो गया। देश के विभिन्न भागों से आए कल्पवासियों ने तीर्थ पुरोहितों के सानिध्य में व्रत, तप का संकल्प लिया। एक माह तक कल्पवासी कुटिया में संयमित और अनुशासित जीवन के साथ साधना करेंगे। पौष पूर्णिमा पर ब्रह्ममुहूर्त से ही स्नान दान शुरू हो गया। जैसे-जैसे दिन चढ़ रहा है घाटों श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ रही है। कल्पवासियों शिविरों में सुबह से श्रद्धा, उत्साह है। तंबुओं की नगरी माघ पूर्णिमा तक कल्पवासियों से गुलजार रहेगी। मान्यता है कि कल्पवास करने से स्वर्ग का द्वार खुल जाता है। जीवन में नई ऊर्जा का संचार होता है।

अब डेयरी, खाद-बीज नीति पर प्रस्तावित बिल का होगा विरोध : राकेश टिकैत

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। किसानों का आंदोलन अभी थमता नहीं दिख रहा। अब उन्होंने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) और धान खरीद सुनिश्चित करने के साथ बिजली, डेयरी, बीज, खाद पर प्रस्तावित बिल आदि मुद्दों को लेकर राष्ट्रव्यापी आंदोलन की तैयारी शुरू कर दी है।भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट की ओर से माघ मेला क्षेत्र में आयोजित सम्मेलन के दूसरे दिन सोमवार को हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में इन मुद्दों को लेकर आगामी छह महीने में होने वाले आंदोलनों पर चर्चा हुई। मंगलवार को भी कार्यकारिणी की बैठक होगी, जिसमें आंदोलन के स्वरूप, तारीखें समेत अन्य कई प्रस्ताव पारित किए जाएंगे।भाकियू के सम्मेलन में शामिल होने के लिए रविवार को ही राकेश टिकैत माघ मेला में लगे शिविर पहुंच गए थे। पहले दिन उन्होंने स्पष्ट कर दिया था कि यूनियन विधानसभा चुनाव में किसी का समर्थन नहीं करेगी और न ही विरोध लेकिन चुनाव बाद एक बार फिर किसानों के मुद्दों पर बड़ा आंदोलन होगा।इसी क्रम में सोमवार को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में किसानों के मुद्दों पर चर्चा हुई। इसमें एमएसपी का मुद्दा तो प्रमुख रहा ही, धान खरीद नहीं होने की समस्या भी किसानों ने उठाई। राकेश टिकैत ने कहा कि सरकार बिजली संसोधन के अलावा खाद, बीज, दूध पर भी बिल लाने जा रही है।इससे किसानों का हक छिन जाएगा। इसलिए इसका विरोध किया जाएगा। इसे लेकर आंदोलन के स्वरूप, तारीखों आदि पर भी चर्चा हुई। बैठक में संगठन के विस्तार तथा सदस्या अभियान चलाए जाने पर भी चर्चा हुई।

किसानों के बीच कई बिंदुओं पर चर्चा करते राकेश टिकैत

कोविड की वजह से महापंचायत नहीं

भाकियू के सम्मेलन में हर वर्ष आखिरी दिन महापंचायत का आयोजन होता रहा है। इसके लिए मंच भी सजता रहा तथा वरिष्ठ नेता किसानों को संबोधित करते थे। महापंचायत में ही बैठकों में हुए निर्णयों की बाबत प्रस्ताव पारित होते रहे हैं लेकिन इस बार महापंचायता का आयोजन नहीं है।कोविड संक्रमण के खतरे को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। इसके बजाय मंगलवार को राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का निर्णय लिया गया है जिसमें सभी बिंदुओं पर चर्चा के साथ प्रस्ताव पारित किए जाएंगे।

महिला अधिवक्ता के घर मुंबई पुलिस की दबिश

प्रयागराज। मुंबई पुलिस की एक टीम ने रविवार को अशोक नगर में महिला अधिवक्ता की घर दबिश दी लेकिन वह घर पर नहीं मिली। कैंट पुलिस की एक टीम भी साथ में थी। महिला अधिवक्ता और उसकी बेटी के खिलाफ मुंबई के व्यवसायी और सपा नेता आसिफ जाफरी ने ब्लैकमेलिंग का मुकदमा दर्ज कराया है। उसी मामले में पुलिस को महिला अधिवक्ता की तलाश है। कौशांबी के रहने वाले आसिफ सिद्दीकी मुंबई के माझगांव में रहकर व्यवसाय करते हैं। वह सपा से जुड़े हैं और मुंबई के पार्टी उपाध्यक्ष के पद पर हैं। उन्होंने पिछले साल 14 नवंबर को कैंट थाना क्षेत्र में रहने वाली महिला अधिवक्ता और उसकी बेटी के खिलाफ ब्लैकमेलिंग और आईटी एक्ट समेत कई धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया था।एफआईआर के मुताबिक महिला अधिवक्ता ने कई बार उनसे आर्थिक मदद मांगी थी। बाद में वह चैटिंग करने लगी। उसने कई लड़कियों की फोटो भी भेजी। बाद में एक लड़की ने उसके साथ अश्लील चैटिंग और वीडियो कॉल भी किया। वीडियो कॉल के तुरंत बाद लड़की ने व्हाट्सएप पर मैसेज भेजकर 20 हजार रुपये मांगे। उन्होंने गूगल पे पर तुरंत पैसे दे दिए। इसके बाद महिला अधिवक्ता ने वही वीडियो उन्हें और उनके भाई को भेजकर दस लाख रुपये, मोबाइल और गाड़ी मांगी।

हिरासत में लेकर रुपये वसूलने की शिकायत पर एसएसपी अजय कुमार हुए सख्त, बैठाई जांच

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। एसएसपी अजय कुमार ने रविवार को झूंसी, नैनी और औद्योगिक क्षेत्र थानों का निरीक्षण किया तो वहां खामियां ही खामियां मिलीं। किसी भी मामले में लोगों को थाने लाकर उन्हें कई कई दिन बैठाने की सूचना पर एसएसपी ने जांच बैठा दी है। तीनों ही थानों में गंदगी और हवालात प्रबंधन के नियमों का पालन करने पर संबंधित थानेदारों को कड़ी फटकार भी लगाई गई। एसएसपी रविवार को झूंसी थाने पहुंचे। यहां बेहद गंदे हालत में हवालात देखकर उन्होंने पूछताछ की। वहां खाने पीने की वस्तुएं और जूठे पत्तल थे। साफ था कि वहां आरोपियों और संदिग्ध व्यक्तियों को नियम विरुद्ध तरीके से रखा गया। उन्हें यह भी पता चला कि पुलिस लोगों को कई कई दिन थाने पर बैठाए रहती है।बाद में उनसे मोटी रकम लेकर उन्हें छोड़ा जाता है। सरकारी वाहन में लाउड हेलर और ड्रैगन भी काम नहीं कर रही थी। उन्होंने एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित को जांच सौंप दी है। एसपी पूरे प्रकरण की विस्तृत जांच करेंगे। उनकी रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी। इसके बाद एसएसपी नैनी और औद्योगिक क्षेत्र थाने पहुंचे। यहां भी हवालात बेहद गंदा था। झूंसी थाने की ही तरह यहां पर भी लोगों को लोगों को थाने पर बैठाकर उनसे वसूली की शिकायतें सामने आईं। नैनी और औद्योगिक थानों की जांच एसपी गंगापार अभिषेक अग्रवाल करेंगे। दोनों से तीन दिन में रिपोर्ट मांगी गई है। एसएसपी के मुताबिक 24 जनवरी तक सभी थानों का औचक निरीक्षण पूरा कर लिया जाएगा।

थाने में जांच पड़ताल करते एसएसपी अजय कुमार

चित्रकूट गैंगरेप हत्याकांड में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने महानिदेशक सीबीसीआईडी को किया तलब

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाइकोर्ट ने चित्रकूट के एक गांव की नाबालिग लड़की से गैंगरेप और हत्या के मामले में नाराजगी जताई है। कोर्ट ने डीजी सीबीसीआईडी महानिदेशक को आज सुबह 10 बजे कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है।मामला चित्रकूट जिले के बहिलपुरवा थाना क्षेत्र के एक गांव का है। यहां रहने वाली 17 साल की लड़की के साथ गैंगरेप कर उसकी हत्या कर दी गई थी। मृतका के पिता ने इस मामले में याचिका दाखिल की थी। इसमें कहा गया है कि घटना 22/23 अगस्त 2020 की रात की है। उसकी नाबालिग लड़की की हत्या कर शव को सहजन के पेड़ में लटकाया गया था, ताकि आत्महत्या का रूप दिया जा सके।

थानाध्यक्ष ने फाड़कर फेंक दी थी तहरीर

याची की तहरीर को तत्कालीन थानाध्यक्ष बहिलपुरवा जयशंकर सिंह ने फाड़कर फेंक दिया था। इसके बाद दबाव डालकर दूसरा प्रार्थना पत्र लिखवाया। इसके बाद पंकज पांडेय ने थाने का चार्ज लिया। आरोप है कि उन्होंने भी वही काम किया। वह भी आरोपियों से मिलकर काम करने लगे।निराश होकर पिता ने तब धारा 156 (3) के तहत कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए अपर सत्र न्यायाधीश (रेप केस एवं पॉक्सो एक्ट) चित्रकूट ने 12 अक्तूबर 2020 को तत्कालीन थानाध्यक्ष बहिलपुरवा पंकज पांडेय को रिपोर्ट दर्ज करने का आदेश दिया। इसके बाद आरोपी सोनू, लवकुश, लालमन समेत 3 अज्ञात लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

टीकाकरण कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित करते मुख्य विकास अधिकारी

सीडीओ ने टीकाकरण में उत्कृष्ट कार्य करने वाले ग्राम प्रधानों एवं एएनएम व आशाओं को प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मुख्य विकास अधिकारी शिपू गिरि ने सोमवार को संगम सभागार में कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम में ब्लाकवार उत्कृष्ट कार्य करने वाले ग्राम प्रधानों एवं एएनएम तथा आशाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मुख्य विकास अधिकारी ने मऊआइमा ब्लाक के ग्राम पंचायत गधिना के ग्राम प्रधान इकबाल अहमद एवं आशा रंजना देवी, मऊआइमा ब्लाक के ग्राम पंचायत रामनगर उमरी के ग्राम प्रधान रामजी एवं आशा गीता देवी, होलागढ़ ब्लाक के ग्राम पंचायत बरई हरख की आशा सरिता देवी, होलागढ़ ब्लाक के ग्राम पंचायत दहियावा की ग्राम प्रधान आशा देवी एवं आशा कूसुम देवी, फूलपुर ब्लाक के ग्राम पंचायत चिरौडा के ग्राम प्रधान कृष्ण कुमार चैरसिया एवं आशा कृष्णा कुमार एवं फूलपुर ब्लाक के ग्राम पंचायत बगईकला के ग्राम प्रधान प्रताप बहादुर सिंह एवं आशा आशा देवी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

क्रिकेट टूनामेंट में डीहा बारी की टीम फाइनल मैच किया अपने नाम

अखंड भारत संदेस

करछना। शेष दुर्गा हर्बल प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड व दुर्गा हर्बल कृषक उत्थान ट्रस्ट गांव कबरा, डीहा, करछना प्रयागराज के द्वारा आयोजित क्रिकेट टूनामेंट जो कि नए वर्ष के प्रथम दिन को शुभारंभ हुआ जिसमें यमुनापार छेत्र की लगभग 36 टीमों ने भाग लिया जिसका फाइनल मैच युवा क्रांतिकारी क्रिकेट क्लब कबरा व डीहा बारी क्रिकेट क्लब डीहा के बीच खेला गया, जिसमें डीहा बारी की टीम ने खेल के हर छेत्र में उच्च प्रदर्शन करते हुए मैच में विजय हासिल किया। विजेता टीम के खिलाड़ी श्री अमन को चतुर्दिक प्रदर्शन करने पर मैन आफ द मैच और मैन आफ द सीरीज का इनाम साइकिल दिया गया। इस मौके पर कम्पनी के संस्थापक व टूनामेंट के आयोजक श्री आर पी पाण्डेय, श्री महेन्द्र नारायण तिवारी, वरिष्ठ अधिवक्ता, वरिष्ठ समाजसेवी श्री चन्द्र प्रकाश तिवारी, जिला पंचायत सदस्य डाक्ट विजय बाबू यादव, श्री शिव प्रकाश तिवारी,श्री बब्बू आदिवासी ग्राम प्रधान कबरा, श्री विद्याधर मिश्रा, अधिवक्ता, श्री शेष मणि मिश्रा, श्री अशोक मिश्रा, श्री आशीष कुमार तिवारी,श्री स्वतंत्र तिवारी, पंकज मिश्रा, अधिवक्ता, पंकज तिवारी, भूपेंद्र तिवारी, श्री प्रबल तिवारी, श्री संजय निषाद जिला प्रभारी निषाद पार्टी, श्री अशर्फी लाल प्रजापति,श्री पंचम प्रजापति, शीनू निषाद, श्री ऋतुध्वज निषाद, श्री ऋतुराज निषाद व हजारों दर्शकगण उपस्थित थे। श्री शीनू निषाद, उप प्रबंधक दुर्गा हर्बल कृषक उत्थान ट्रस्ट, कबरा द्वारा टूनामेंट में निः शुल्क साउंड सिस्टम उपलब्ध कराया गया। इस टूनामेंट में टीम संयोजन और व्यवस्थापक की भूमिका श्री स्तुति नारायण तिवारी (सचिन तिवारी), श्री विवेक पाण्डेय, श्री अमन तिवारी, श्री नयन तिवारी व टीम के सभी खिलाड़ियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विजेता टीम को मुख्य अतिथि नें किया पुरस्कृत

माघ मेला क्षेत्र से इस बार स्पीड पोस्ट और रजिस्ट्री की सुविधा नहीं, श्रद्धालु परेशान

प्रयागराज। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के पावन संगम में प्रत्येक वर्ष प्रयागराज में माघ मेला लगता है। इस बार माघ मेला क्षेत्र से स्पीड पोस्ट, रजिस्ट्री और पार्सल भेजने की सुविधा नहीं मिल पाएगी। इस सुविधा के लिए लोगों को मेला क्षेत्र के बाहर दारागंज पोस्ट आफिस जाना होगा। इससे माघ मेला में आने वाले श्रद्धालुओं और कल्पवासियों को असुविधा हो सकती है।डाक विभाग की ओर से पूर्व में माघ मेला में साधु-संतों व कल्प वासियों की सहूलियत के लिए मेला प्रशासन कार्यालय के पास में पोस्ट आफिस खोला जाता था। इससे विभाग को एक माल में दस लाख रुपये से अधिक की आय होती थी। हालांकि इस बार यहां पर पोस्ट आफिस नहीं खोला जाएगा।

सीनियर पोस्ट मास्टर ने यह कहा

डाक विभाग के सीनियर पोस्ट मास्टर ने बताया कि माघ मेला क्षेत्र पोस्ट आफिस न खोलने का निर्णय अधिकारियों को है। किस कारण से डाकघर नहीं खोला जा रहा है, इसकी विशेष जानकारी नहीं है। शायद कोरोना के बढ़ते संक्रमण के कारण इस बार डाकघर नहीं खोलने का निर्णय लिया गया है।

क्रिकेट टूनामेंट के फाइनल मैच में सुलमई कीं टीम बनी विजेता

अखंड भारत संदेस

करछना। करछना क्षेत्र के बीएमजी डिग्री कॉलेज बघेडा के खेल मैदान में पखवारे भर से चल रहे बीएमजी विशाल क्रिकेट टूनामेंट का फाइनल मुकाबला बघेड़ा क्रिकेट क्लब व सुलमई क्रिकेट क्लब के बीच दिलचस्प और रोमांचक मुकाबला सोमवार को हुआ । जिसमें पहले बल्लेबाजी करते हुए सुलमई की टीम ने निर्धारित 12 ओवरों में 8 विकेट खोकर 127 रन का लक्ष्य रखा । बघेडा की टीम ने निर्धारित लक्ष्य का पीछा करते हुए 9 विकेट पर 122 रन पर ही सिमट गई । जिससे सुलमई ने फाइनल मुकाबला 6 रन से जीत लिया । वहीं दर्शकों की भारी भीड़ रही । और प्रतिभागी खिलाड़ियों का तालियों की गड़गड़ाहट से उत्साहवर्धन करते रहे। पुरस्कार वितरण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे सदस्य जिला पंचायत राजेश्वर प्रसाद पांडेय व करछना के पूर्व ब्लाक प्रमुख विजय राज सिंह राजू तथा विशिष्ट अतिथि सदस्य पूर्व जिला पंचायत रवीश चंद्र तिवारी व बघेडा के ग्राम प्रधान राजनाथ निषाद रहे। अतिथियों की ओर से विजेता टीम को 11 हजार रुपए नकद सहित शील्ड व उपविजेता टीम को 51सौ रुपए नकद सहित शील्ड से पुरस्कृत किया गया । वही बघेडा की टीम के खिलाड़ी को मैन ऑफ मैच से भी नवाजा गया। एंपायर के रूप में अंकित सिंह व अंकुर सिंह रहे। कमेंटेटर के रूप में एसपी सिंह व गोलू सिंह रहे । प्रतियोगिता के आयोजक रणविजय सिंह संयोजक सुरेंद्र सिंह व व्यवस्थापक धर्मेंद्र सिंह ने सभी अतिथियों समेत विजई प्रतिभागी खिलाड़ियों के प्रति आभार जताया। इस मौके पर बघेडा डिग्री कॉलेज के प्राचार्य डॉ एस पी शुक्ला घनश्याम सिंह राज कुमार सिंह शारदा प्रसाद पाल रविंद्र प्रताप सिंह के पी सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

मुख्य अतिथि पूर्व ब्लाक प्रमुख विजय राज सिंह विजेता टीम को किया पुरस्कृत

जिले के 41 केन्द्रों पर 23 जनवरी को सम्पन्न होगी टीईटी परीक्षा

स्टेटिक मजिस्ट्रेट, पर्यवेक्षकों की अफीम कोठी में बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) 23 जनवरी को सुचिता, पवित्रता, कुशलता एवं नकल विहीन जिले के 41 केंद्रों पर संपन्न कराने के लिए डॉ सर्वदानंद जिला विद्यालय निरीक्षक की अध्यक्षता में बैठक अफीम कोठी में संपन्न हुई जिसमें परीक्षा से संबंधित सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट स्टैटिक मजिस्ट्रेट पर्यवेक्षक केंद्र, व्यवस्थापक सचल दल प्रभारी एवं परीक्षा से संबंधित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हुए।

बैठक को संबोधित करते हुए जिला विद्यालय निरीक्षक डा0 सर्वदानंद ने कहा कि इस परीक्षा को हमको पूरी तरह से निष्पक्ष होकर पवित्रता एवं सुचिता के साथ संपन्न करानी है। इसके लिए हर संभव व्यवस्था की गई है। सभी केंद्रों पर पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की गई है क्योंकि यह परीक्षा अति संवेदनशील है, इसलिए हमको पूर्ण रूप से सजग होकर को संपन्न करानी है। इस परीक्षा में जिला प्रशासन व शिक्षा विभाग की तरफ से स्टैटिक मजिस्ट्रेट और पर्यवेक्षक नियुक्त किए गए हैं, उनकी देखरेख में परीक्षा संपन्न होगी। जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग के सचल दल लगातार भ्रमण करके परीक्षा का औचक निरीक्षण करेंगे। परीक्षा प्रारंभ होने से आधे घंटे पहले परीक्षार्थी परीक्षा केंद्रों पर हर हाल में प्रवेश कर लेंगे। इसके पश्चात किसी को प्रवेश नहीं कराया जाएगा। मोबाइल फोन और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का प्रयोग कोई नहीं करेगा। परीक्षा में ड्यूटी करने वाले समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पास उनका परिचय पत्र रहेगा। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ मोहम्मद अनीस ने बताया कि जनपद में प्रथम पाली में परीक्षा 27 केंद्रों पर संपन्न होगी और दूसरी पाली में 14 केंद्रों पर संपन्न होगी। शिव प्रकाश प्राचार्य अफीम कोठी ने परीक्षा व्यवस्था पर एवं परीक्षा से संबंधित सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सुधीर कुमार सिंह ने कहा कि सभी केंद्रों पर शिक्षकों की कमी को वह बेसिक शिक्षा विभाग के अध्यापकों की ड्यूटी लगाकर करेंगे। स्टैटिक मजिस्ट्रेट प्रथम पाली में सुबह छह बजे एवं द्वितीय पाली के लिए 11 बजे कोषागार के डबल लॉक से प्रश्न पत्रों को प्राप्त करेंगे और संबंधित केंद्रों पर पहुंचाएंगे। इस मौके पर इनाडु प्रसाद सह जिला विद्यालय निरीक्षक,. जटाशंकर प्राचार्य राजकीय इंटर कॉलेज पूरबगांव, राजकुमार कुमार सिंह राजकीय इंटर कॉलेज, सुधीर कुमार सिंह जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, शिव प्रकाश प्राचार्य अफीम कोठी, डॉ विंध्याचल सिंह प्राचार्य राजकीय बालिका इंटर कॉलेज बरहदा, आरएन तिवारी सहायक वित्त लेखा अधिकारी राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, गरिमा श्रीवास्तव, डॉ बृजभान सिंह, प्रमोद कुमार तिवारी, डॉली केसरवानी, मोहम्मद सईद, सिद्धार्थ कुमार श्रीवास्तव, अखिलेश भारती, राजेश पाल श्याम शंकर सरोज एवं शिक्षा विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

अफीम कोठी में आयोजित बैठक में बोलते अधिकारी।

धूमधाम से मनाया गया कालेज का स्थापना दिवस

अखंड भारत संदेश

पट्टी नगर, प्रतापगढ़। पट्टी तहसील क्षेत्र के सावित्री दयाराम पांडे संस्कृत पीजी कॉलेज एवं बाल शिक्षा निकेतन हनुमान नगर नारंगपुर में कॉलेज का स्थापना दिवस कोविड-19 नियमों के अनुरूप सोशल डिस्टेंसिंग बनाकर धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के वंदना गीत से प्रारंभ हुआ उसके बाद विद्यालय के प्रबंधक दयाराम पांडे ने सभी आए हुए अतिथियों का माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डायट प्रवक्ता प्रतापगढ़ डॉ सतीश तिवारी ने कहा कि शिक्षा ही किसी भी व्यक्ति को मनुष्य बनाने का कार्य करती है। शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद अशोक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि यह कॉलेज क्षेत्र का गौरव है। संस्कृत एक वैज्ञानिक और सबसे प्राचीन भाषा है इस भाषा के महत्व को बढ़ाने के लिए इस कॉलेज की बहुत बड़ी भूमिका है। कार्यक्रम को वीरेंद्र बहादुर यादव, पवन पांडे, अनिल कुमार चौरसिया, रामप्रताप चौरसिया, राधेश्याम चौरसिया जयप्रकाश मिश्रा आदि लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्राचार्य सुरेंद्र कुमार पांडे ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

केंद्र की मोदी सरकार पर वाह्य तथा आंतरिक क्षेत्र में विफल : प्रमोद

कांग्रेस प्रतिज्ञा पर शत प्रतिशत होगी खरी साबितः मोना

अखंड भारत संदेश

प्रमोद तिवारी।

लालगंज, प्रतापगढ़। यूपी कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता एवं जिले की रामपुरखास की विधायक आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि कांग्रेस महिलाओं के सशक्तीकरण को लेकर अपनी प्रतिज्ञा पर शत प्रतिशत खरी उतरेगी। उन्होंने बतौर उदाहरण कहा कि कांग्रेस ने यूपी विधानसभा चुनाव को लेकर जारी प्रत्याशियों की सूची मे महिलाओं का सशक्त प्रतिनिधित्व प्रदान कर अपने वायदे की कसौटी पर सही भी साबित हो चुकी है।

सोमवार को नगर स्थित कैम्प कार्यालय पर पत्रकारों से वार्ता करते हुए सीएलपी नेता आराधना मिश्रा मोना व केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी ने राष्ट्रीय सुरक्षा तथा युवाओं मे रोजगार को लेकर निराशा के साथ घरेलू मंहगाई पर केंद्र एवं राज्य की बीजेपी सरकार पर कड़ा सवालिया निशान उठाये। कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि प्रदेश मे विधानसभा के हो रहे इस चुनाव मे भाजपा के पास विकास तथा लोगों की सुरक्षा को लेकर अपनी जवाबदेही को लेकर जनता के बीच निरूत्तर बने रहने की मजबूरी है। उन्होंने कहा कि हाथरस समेत यूपी के कई हिस्सों मे जिस तरह से महिलाओं व बेटियों के साथ दरिंदगी हुई है इससे आक्रोशित प्रदेश की आधी आबादी इस बार मजबूती से भाजपा को सत्ता से बेदखल कर अपना हिसाब पूरा करेगी। आराधना मिश्रा मोना तथा प्रमोद तिवारी ने कार्यकताओं से बातचीत के दौरान चुनाव प्रचार के तहत हर कीमत पर कोरोना गाइडलाइन व आदर्श आचार संहिता के मापक पर भी खरा उतरते हुए रामपुरखास की परम्परागत आदर्श छवि को मजबूत बनाये रखने के भी निर्देश दिये। इस मौके पर जिला कांग्रेस सेवादल अध्यक्ष महेन्द्र शुक्ल, रामलवट यादव, देवीशंकर पाण्डेय, भगवती प्रसाद तिवारी, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, अमित प्रताप सिंह, केडी मिश्र, ददन सिंह, संतोष द्विवेदी, पप्पू तिवारी, सत्येंद्र सिंह, कुंवर ज्ञानेन्द्र सिंह, रामचंद्र तिवारी, छोटे सिंह, राजू पाण्डेय, राजेन्द्र यादव, संतोष सिंह, भूपेन्द्र तिवारी काजू, शास्त्री सौरभ, त्रिभु तिवारी आदि रहे।

ट्रेन से उतरने वाले यात्रियों की रेलवे स्टेशन पर हो रही जांच

स्वास्थ्य विभाग की दो टीमें रेलवे स्टेशन पर तैनात

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन पर स्वास्थ्य विभाग की टीम ने ट्रेनों से उतरने वाले लोगों को कोरोना टेस्ट करने के बाद ही बाहर निकलने दे रही है। विशेष रुप से दिल्ली, लखनऊ व मुम्बई से आने वाले यात्रियों पर स्वास्थ्य विभाग विशेष निगरानी रख रहा है रेलवे स्टेशन के मुख्य गेट पर सोमवार को स्वास्थ्य विभाग की दो टीमें लगाई गई थी जिनके साथ रेलवे की पुलिस भी थी। रेलवे पुलिस यात्रियों से लाइन में खड़ा करके एक-एक यात्री का कोरोना टेस्ट कराकर गेट के बाहर निकाल रही थी। दिल्ली से आने जाने वाली काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस, पदमावत एक्सप्रेस की ट्रेनों से उतरे यात्रियों की विशेष चेकिंग की गई। बता दें कि दिल्ली और महाराष्ट्र में कोरोना संक्रमण बहुत ज्यादा है और वहां से बेल्हा आने वाले यात्री कहीं कोरोना फैलाने का कार्य न करें, इस आशंका को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने दो टीमें रेलवे स्टेशन पर तैनात कर दी है, जो टेस्ट करने के बाद ही यात्रियों को बाहर निकलने दे रही हैं।

यात्रियों का कोरोना टेस्ट करती स्वास्थ्य विभाग की टीम।

दीवानी न्यायालय में वादकारियों के प्रवेश पर रोक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए प्रतापगढ़ जिला मुख्यालय पर बंदिशें लगने लगी हैं। सोमवार को दीवानी न्यायालय में वादकारियों के प्रवेश पर रोक लगा दी गई। दीवानी न्यायालय में केवल अधिवक्ता व न्यायालय स्टाफ ही प्रवेश पा सकता है। यह आदेश जनपद न्यायाधीश ने करते हुए दीवानी न्यायालय के कर्मचारियों से कहा है कि वह आधी क्षमता में क्रम से कार्यालय आएं। बता दें कि कोरोना के केस जिले में भी बढ़ रहे हैं। इससे प्रशासन चिन्तित है और भीड़ को रोकने का प्रयास किया जा रहा है।

दीवानी न्यायालय परिसर पर तैनात पुलिस बल।

चौकी इंचार्ज ने क्षेत्र में किया फ्लैग मार्च

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। चुनाव में सुरक्षा का माहौल बनाने के लिये दीवानगंज चैकी इंचार्ज अशोक कुमार सिंह थाना क्षेत्र कंधई ने सुरक्षा बल के जवान व चैकी फोर्स के साथ पैदल मार्च किया। विधानसभा चुनाव को सकुशल व भयमुक्त वातावरण में कराने के लिए चैकी इंचार्ज अशोक कुमार सिंह सुरक्षा बल के जवानों के साथ पैदल मार्च किये। साथ ही लोगों से भयमुक्त होकर मतदान करने के लिए अपील की। अहियापुर, बाबा बेलखरनाथ धाम,शीतलागंज बाजार और दीवानगंज चैराहे तक पैदल मार्च किये। इस दौरान जनता से भयमुक्त व निडर होकर मतदान करने की अपील किए। क्षेत्र में भारी पुलिस बल के साथ गश्त कर रहे पुलिस कर्मियों को देख बदमाशों व असमाजिक तत्वों में मचा रहा हड़कंप। पैदल गश्त के दौरान क्षेत्र के पोलिंग बूथों पर भी जाकर निरीक्षण किया।

पेड़ से गिरकर युवक घायल

पट्टी, प्रतापगढ़। लकड़ी तोड़ने चढ़ा आम के पेड़ से गिरकर युवक घायल हो गया। आसपुर देवसरा क्षेत्र नरेंद्र कुमार वर्मा पुत्र राजाराम वर्मा निवासी तिबीपुर सोमवार की दोपहर घर से कुछ दूर स्थित जंगल में जलाने के लिए लकड़ी तोड़ने आम के पेड़ पर लकड़ी तोड़ने चढ़ा था कि पेड़ पर से नरेंद्र नीचे आ गिरा आसपास खेतो में काम कर रहे लोगों ने देखा तो घटना की सूचना परिजनों को दी। भाग कर परिजन मौके पर पहुंच कर घायल युवक को नजदीकी अस्पताल ले गए जहां पर घायल युवक का इलाज चल रहा है।

मंदिर में हुई करोड़ों की मूर्ति चोरी के मामले मे दूसरे दिन भी पुलिस के हाथ खाली

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जलेशरगंज बाजार मे मंदिर से अष्टधातु की करोड़ो की मूर्तियां की चोरी के मामले मे दूसरे दिन भी पुलिस के हाथ खाली है। सीसी टीवी फुटेज के आधार पर पुलिस आरोपियो को चिन्हित करने मे जुटी हुई है। लालगंज कोतवाली के जलेशरगंज बाजार मे स्थित एक मंदिर का ताला तोडकर शनिवार की रात अज्ञात चोरों ने करोड़ो की अष्टधातु की चार मूर्तियां चोरी कर लिये थे। पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर एक संदिग्ध को पूछताछ के लिए कोतवाली लायी थी। पूछताछ के बाद पुलिस ने देर रात उसे छोड दिया। अब पुलिस सीसी टीवी के आधार पर आरोपियो को चिन्हित करने मे जुटी है। उधर घटना को लेकर बाजारवासियो मे आक्रोश बरकरार है। बाजारवासियो का कहना है कि पुलिस ने घटना के खुलासे के चैबीस घंटे का समय दिया था लेकिन अभी तक चोरों का कोई सुराग नही लग सका है। आक्रोशित लोग फिर से हंगामा करने का मन बना चुके हैं। इस बारे मे कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि सीसी टीवी फुटेज मे कुछ संदिग्ध दिखाई दिये हैं उन्हे चिन्हित करने का प्रयास किया जा रहा है। शीघ्र ही घटना का खुलासा कर चोरों को जेल भेजा जाएगा।

करेंट लगने से बन्दर की मौत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के कालाकांकर ट्रेनिंग सेंटर के रास्ते में सोमवार की सुबह लोहे के बिजली के खम्भे में करेंट उतरने से एक बन्दर की मौके पर मौत हो गई। मौके पर आस पास के लोगो की भारी भीड़ जमा हो गयी। गांव के समाज सेवी शिवम अग्रहरि ने अपने सहयोगियों के साथ गंगा किनारे गड्ढा खोदवाकर बन्दर को कपड़े में लपेट कर अंतिम संस्कार कराया। इस दौरान लोगो की भारी भीड़ लगी रही।

अचलपुर में आयोजित श्रीराम कथा में बोलतीं कथा वाचिका गौरी।

प्रभु राम की कथा सुनने से बनी रहती है कृपा : गौरी अचलपुर में आयोजित हुई श्रीराम कथा

प्रतापगढ़। नगर के जेल रोड स्थित विकासनगर अचलपुर में कथा वाचिका पूज्य देवी गौरांगी गौरी के मुखारविंद से प्रभु श्रीराम की कथा का श्रवण क्षेत्रीय श्रद्धालुओं द्वारा ग्रहण किया गया। इस मौके पर मोहल्ले के सभी सम्मानित महानुभाव का पूरा सहयोग था।

कथा वाचिका गौरी ने प्रभु श्री राम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रभु राम की कथा सुनने से प्रभु की कृपा सदैव बनी रहती है। संगीतमय इस कथा से लोगों ने अपने पूरे परिवार सहित सम्मिलित होकर के कथा सुनकर के धर्म की आस्था में लोगों ने डुबकी लगाई। इस मौके पर कमला कांत तिवारी, उदय पाल सिंह, बाल गोविंद तिवारी, उप संपादक लालजी पांडे, विनोद सिंह, अनिल कुमार मिश्र, बृजेश सिंह, कौशल सिंह, संजय पांडे, सिद्धि नाथ पांडे, सुशील कुमार मिश्र, रवींद्र मिश्र एडवोकेट आदि लोग उपस्थित रहे। कथा का सफल संयोजन धर्मनिष्ठ लेखपाल सुशील कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

विश्वकर्मा समाज की बैठक में मौजूद अतिथिगण।

किसी भी सरकार ने विश्वकर्मा समाज की नहीं ली सुधः महरानीदीन

भूपति गांव में विश्वकर्मा समाज की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश में अन्य पिछड़े वर्ग की श्रेणी में गिना जाने वाला विश्वकर्मा समाज एक अरसे से समाजवादी पार्टी का समर्थक रहा लेकिन आज तक वह केवल ओबीसी बन कर ही रह गया है। किसी भी सरकार ने इनकी ओर मुड़कर नहीं देखा। भाजपा ने साथ तो इनका लिया लेकिन विकास को इनके पास तक पहुँचने नहीं दिया।

यह बातें विश्वकर्मा समाज के युवा उम्मीदवार महरानीदीन विश्वकर्मा ने क्षेत्र के सराय भूपति गांव में आयोजित एक कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि समाज के जागरूक लोग राजनीतिक भागीदारी में उपेक्षा का कारण संगठन की कमजोरी मानते हुए इस बार संगठित हों। उन्होंने कहा कि इस बार विश्वकर्मा समाज अपने उम्मीदवार को जिताने के लिए कमर कस लिया है और पूरी मजबूती से जन समर्थन जुटाने के लिए निकल पड़ा है। कार्यक्रम में छेदीलाल विश्वकर्मा, राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, बृजेश कुमार विश्वकर्मा, राम दुलारे विश्वकर्मा, अशोक कुमार विश्वकर्मा, सुरेश कुमार विश्वकर्मा, रामचंद्र विश्वकर्मा, राम चन्दर विश्वकर्मा, रामसूरत विश्वकर्मा, प्रेमचंद विश्वकर्मा, राम कैलाश विश्वकर्मा सहित विश्वकर्मा समाज के सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

कड़ाके की ठंड के बीच श्रद्धालुओ ने लगाई गंगा में आस्था की डुबकी

परियावां, प्रतापगढ़। पौष पूर्णिमा के पावन पर्व पर सोमवार को कालाकांकर के पवित्र गंगाजल में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने कड़ाके की ठंड की परवाह न करते हुए गंगा में आस्था की डुबकी लगाई। गंगा स्नान के पश्चात श्रद्धालुओ ने मां गंगा की पूजन अर्चन के साथ गंगा किनारे स्थित बूढ़े शिव लिंग मंदिर व ठाकुर महराज के साथ बजरंग बली शनिदेव महराज की पूजन अर्चन कर परिवार के सुख समृद्धि की कामना किया। सुरक्षा को देखते हुए नवाबगंज पुलिस सक्रिय रही गंगा स्नान का पर्व दोपहर तक चलता रहा।

बाघराय पुलिस ने जिला बदर अभियुक्त को किया गिरफ्तार

अवैध गांजा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में आगामी विधानसभा चुनाव, 2022 को निष्पक्ष व शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराए जाने के दृष्टिगत जनपद पुलिस द्वारा निरंतर अभियान चलाकर अपराध/अपराधियों के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है।

इसी क्रम में जनपद के थाना बाघराय से उ0नि0 दुर्गेश कुमार मय हमराह द्वारा एक जिला बदर अभियुक्त विजयानन्द दुबे पुत्र रामानन्द दुबे निवासी चकवड़ थाना बाघराय, जिसे न्यायालय द्वारा 27 दिसम्बर 2021 से छह माह के लिये जिला बदर किया गया था, लेकिन न्यायालय का आदेश न मानने व घर पर ही रहने के कारण अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0- 15/2022 धारा 3/10 उ0प्र0 गुण्डागर्दी नियंत्रण अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया। उधर थाना महेशगंज से उ0नि0 संजय कुमार सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र के फिरोज जुनियर हाईस्कूल, ग्राम पटना के पास से एक व्यक्ति दिनेश पाण्डेय पुत्र शिवलखन पाण्डेय निवासी ग्राम पटना थाना महेशगंज को 400 ग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 14/22 धारा 08/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया है।

कच्ची शराब के साथ तीन अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना बाघराय से उ0नि0 सतीश कुमार मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र के ग्राम छेवंगा से दो व्यक्तियों मनोज सरोज पुत्र बोडीराम व करनजीत पुत्र रामदुलारे सरोज निवासीगढ़ छेवंगा थाना बाघराय को 10-10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के संबंध में थाना स्थानीय पर क्रमशः मु0अ0सं0 16/2022 धारा 60 आबकारी अधि0 बनाम मनोज सरोज उपरोक्त व मु0अ0सं0 17/2022 धारा 60 आबकारी अधिनियम बनाम करनजीत उपरोक्त के पंजीकृत किया गया। उधर थाना आसपुर देवसरा से उ0नि0 देवेन्द्र प्रताप सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र के ग्राम पूरेदलपतशाह नहर पुलिया के पास से एक व्यक्ति विनोद कुमार पुत्र ओम प्रकाश कुमार निवासी ग्राम पूरेदलपतशाह थाना आसपुर देवसरा को 20 पाउच अवैध देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के संबंध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 09/2022 धारा 60 आबकारी अधि0 का अभियोग पंजीकृत किया गया।

अवैध तमंचा-कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना संग्रामगढ़ से उ0नि0 सुरेश कुमार यादव मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के खनवारी तिराहा के पास से एक व्यक्ति गोविन्द कुमार सरोज पुत्र श्यामराज सरोज निवासी ग्राम काशीपुर नरई थाना संग्रामगढ़ को एक तमंचा 315 बोर व दो अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के संबंध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 16/2022 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया।

विद्युत कनेक्शन को लेकर आरोपियों ने महिलाओं को पीटा

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। विद्युत कनेक्शन लेने को विवाद लेकर पड़ोसी ने दो महिलाओं को पीट दिया पीड़ित ने इस संबंध में शिकायती पत्र देकर कोतवाली में तहरीर दिया है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के सराय मधई गांव की पूजा सिंह अपने घर में कनेक्शन ले रही थी जिस पर पड़ोसी आरोपियों ने कनेक्शन लेने से मना किया इसी बात को लेकर सोमवार की सुबह आठ बजे आरोपियों ने महिलाओं को मारा पीटा जिसमें पुष्पा और पूजा को गंभीर चोटे आई तथा उनकी बेटी कोमल को भी जख्मी हो गई। पीड़ित इलाज कराने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पट्टी पहुंचे और थाने में आरोपियों के खिलाफ शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।

रंजिश के चलते महिला की हुई पिटाई के मामले मे चार आरोपियों पर केस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। पुरानी रंजिश के चलते मारपीट मे चार आरोपियो के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। लालगंज कोतवाली के अर्जुनपुर निवासी वीरेन्द्र सरोज की पत्नी उमा देवी ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती सोलह जनवरी को रंजिश के चलते गांव के सुमित, अमित, पुत्तीलाल व सरजू की पत्नी ने घर मे घुसकर लाठी डण्डो से मारपीट कर लहूलुहान कर दिया। शोरशराबा सुनकर ग्रामीणों ने किसी तरह उसकी जान बचाई। आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकले। पीड़िता की शिकायत पर सुमित समेत चारों आरोपियो के खिलाफ घर मे घुसकर मारपीट व जान से मारने की धमकी के आरोप मे मुकदमा दर्ज किया गया है। कोतवाल कमलेश पाल ने बताया कि शिकायत पर केस दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

खबर संक्षेप

वारण्टी अभियुक्त हुआ गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त सूर्य नारायण पुत्र बलर निवासी मेडुआ सलेम थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त श्रीकृष्ण पुत्र छेदीलाल पासी निवासी पूरब शरीरा थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त उपेन्द्र कुमार पुत्र दयाराम निवासी हडिया मजरा बहादुरपुर थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

अनियंत्रित ट्रक नहर में गिरा ड्राइवर की मौत, खलासी गम्भीर रूप से घायल

अलीगढ़ निवासी ट्रक चालक लोहे का सामान लेकर जा रहा था बनारस की तरफ

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के राष्ट्रीय राजमार्ग पर गुरुकुल महाविद्यालय सैनी के पास गुजरी राम गंगा नहर में सोमवार की सुबह सवेरे ट्रक चालक अनियंत्रित होकर ट्रक सहित नहर में गिर गया मौके पर ही ट्रक ड्राइवर की मौत हो गयी वहीं गम्भीर रूप से घायल खलासी 4 घंटे तक ट्रक में फंसा रहा सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक चालक का शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और घायल खलासी को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। घटना कब के मुताबिक सोमवार सुबह लगभग 6 बजे ट्रक ड्राइवर प्रयागराज की तरफ से कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग होकर लोहे का सामान लादकर जा रहा था जैसे ही ट्रक चालक सैनी नहर के पास पहुंचा

नहर में ट्रक गिर जाने के बाद घटनास्थल पर मौजूद ग्रामीण

कि अनियंत्रित हो गया और सैनी कोतवाली से 500 मीटर दूर नहर के पास ट्रक सहित नहर में गिर गया जिसमे ट्रक ड्राइवर शुभ निवासी अलीगढ़ की मौके पर ही मौत हो गयी वहीं खलासी गम्भीर रूप से घायल हो गया सूचना पर स्थानीय प्रशासन, कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंचकर पीएनसी के हाइड्रा, जेसीबी मशीन लेकर राहत और बचाव कार्य मे जुट गई जबरजस्त दुर्घटना के कारण ड्राइवर और खलासी कई घंटे तक ट्रक में ही फंसे रह गए ग्रामीणों राहगीरों की भीड़ मौके पर लग गयी ग्रामीणों के सहयोग और कड़ी मशक्कत के बाद गम्भीर घायल खलासी गुड्डू उर्फ शाकिर निवासी बुलंदशहर को ट्रक से निकालकर एम्बुलेंस की मदद से अस्पताल भेज दिया जहां उसका उपचार चल रहा है वहीं चालक के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम को भेज दिया है।

अवैध शराब के साथ तीन किये गये गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में जिले में चलाए जा रहे अवैध शराब के निर्माण एंव तस्करी के विरुद्ध अलग अलग थानों द्वारा 45 लीटर अवैध शराब के साथ तीन अभियुक्तो को गिरफ्तार कर उनका चालान न्यायालय कर दिया गया है जानकारी के मुताबिक थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा अभियुक्त हरिचन्द्र पुत्र स्व0 रोशनलाल निवासी तिल्हापुर थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर कब्जे से 20 लीटर अवैध शराब मय बनाने के उपकरण बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त संजय भारतिया पुत्र स्व० सुरेश भारतिया निवासी चन्द्रभान को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब मय बनाने के उपकरण बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना चरवा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त पंकज सेन पुत्र अमर सेन निवासी सेखपुर रसूलपुर थाना चरवा को गिरफ्तार कर कब्जे से 15 लीटर अवैध शराब मय बनाने के उपकरण बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

ग्राम प्रधान और उसके साथी पर हमला कर नगदी मोबाइल लूटा

लूट के दौरान घायल ग्राम प्रधान

अखंड भारत संदेश

कोखराज थाना क्षेत्र के टेगाई तालाब के पास दिनदहाड़े चार लोगों ने दिया घटना को अंजाम

टेडीमोड कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के टेगाई तालाब के पास ग्राम प्रधान और उसके साथी पर लाठी-डंडे से हमला कर उनका मोबाइल और नकदी रुपए छीन लिया गया है मामले की जानकारी ग्राम प्रधान ने स्थानीय पुलिस को दिया है। घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के आहिरारा ग्राम प्रधान जय प्रकाश पटेल अपने साथी सुरेश पटेल कुमार निवासी टेड़ीमोड के साथ दोपहर 2:00 बजे अपने घर से टेगाई गाँव सफाई कर्मचारी के पास जा रहे थे अचानक इण्डिका कार मे चार लोगो ने टेगाई तलाब के पास रुकवाकर ग्राम प्रधान और उसके साथी को लाठी डंडे से मार पीट कर एक मोबाईल आपो 5000 रुपए नगद लूट लिया है घटना की जानकारी ग्राम प्रधान ने थाना पुलिस को दिया है खबर लिखे जाने तक घटना की सुराग रस्सी नहीं लग सकी है।

तेज रफ्तार ट्रैक्टर की चपेट में आई युवती हुई दर्दनाक मौत

शीतलहर के चलते घर के बाहर धूप में खड़ी थी युवती

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के शादीपुर गांव के पास एक अनियंत्रित ट्रैक्टर ने युवती को कुचल दिया जिससे उसकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार निशा देवी उम्र लगभग 18 वर्ष पुत्री सिकंदर सरोज निवासी शादीपुर अपने घर के बाहर धूप में खड़ी होकर धूप ले रही थी फरीदा गंज की तरफ मिट्टी लेकर जा रहे अनियंत्रित ट्रैक्टर चालक ने युवती को कुचल दिया जिससे युवती की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई सूचना पर परिजनों में कोहराम मच गया हादसे की जानकारी मिलने पर घटनास्थल

हादसे में युवती की मौत के बाद मौके पर एकत्रित भीड़

पर कड़ा धाम कोतवाली पुलिस पहुँची और युवती के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजकर कार्रवाई में जुट गई है हादसे के बाद ट्रेक्टर ड्राइवर मौके से फरार बताया जा रहा है।

24 वर्ष बाद भी विकास से दूर है कौशांबी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। इलाहाबाद से अलग हो कर कौशाम्बी जिले का गठन आज से लगभग 24 साल पहले 4 अप्रैल 1997 को हुआ था जिसका जिला मुख्यालय मंझनपुर बनाया गया है कौशाम्बी का इतिहास बहुत पुराना है। जैंन व बौद्ध भूमि के लिए यह प्रसिद्ध है कौशाम्बी जैन धर्म के 6वे तीर्थकार श्री पद्मप्रभु जी के जन्म स्थान एंव बुद्ध काल की परम प्रसिद्ध, नगरी जो वत्स देश की राजधानी थी। जो कि विकास के मामले में कौशाम्बी आज भी बहुत पीछे है शिक्षा के मामले में आज भी कौशाम्बी जिला बहुत पीछे है। क्यो कि स्कूल व कालेजो में अभी तक कोई अच्छी सुविधा नहीं हुई है। स्वास्थ्य सुविधा के मामले में तो जिला बहुत पीछे है अभी तक न कोई अच्छा मेडिकल कालेज और न इजिनियरिंग कालेज है। जो कि कैम्पस से प्लेसमेन्ट दिलाता हो। इस लिए इस जिले में बेरोजगारी व गरीबी बहुत ज्यादा है। और न फैक्टरी व कम्पनी इस जिले में न के बराबर है। इसी लिए यहॉ के लोग मुम्बई व गुजरात और दिल्ली रोजगार के लिए पलायन करते है। लगभग 6-7 बार राज्य सरकार बदल चुकी है। लेकिन इस दृष्टि पर कोई राज नेता का ध्यान नही गया न कोई राज नेता विकास करने की कोशिश की है। जब भी चुनाव आता है। सभी नेता दिखावा करते है। और चुनाव के बाद सब भूल जाते है। इस लिए कौशाम्बी जिले का विकास नही हो सका है। लेकिन ऐसा देखा गया है कि जब कोई जिला नया बनता है। तब उस जिले का विकास बडी तीव्र गति से होता है। लेकिन कौशाम्बी जिले के साथ ऐसा नहीं हुआ।

गौ संरक्षण केंद्र में पशुओं को संरक्षित करने का दावा करता प्रशासन

जनपद में 1157 गौवंश को किया गया संरक्षित

अखंड भारत संदेश

जनपद में 11 हजार 195 पशुओं को किया जा चुका है संरक्षित

कौशाम्बी। जिलाधिकारी के निदेर्शानुसार जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में घूम रहे आवारा पशुओं जो कृषकों की फसलों को नुकसान पहुॅचा रहे है एवं शहरी क्षेत्र में मार्गो एंव सड़कों पर घूम रहे आवारा पशुओं को दिनांक 03 जनवरी 2022 से विशेष अभियान चलाकर जनपद में कुल 1157 गौवंश को विभिन्न गो-आश्रय स्थलों में संरक्षित किया गया जनपद में कुल 13817 आवारा पशुओं का लक्ष्य है, जिसमें से आज दिनांक 17 जनवरी 2022 तक कुल 11195 पशुओं को संरक्षित किया जा चुका है। शेष आवारा पशुओं को चल रहे विशेष अभियान के तहत गो-आश्रय स्थलों में संरक्षित कराया जाने का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में जनपद में एक दर्जन अधिक अस्थायी गो-आश्रय स्थल का निर्माण कार्य प्रगति पर है, कार्य पूर्ण होते ही इन सभी गो-आश्रय स्थलों में भी आवारा घूम रहे पशुओं को अभियान चलाकर संरक्षित किये जाने का कार्य किया जायेगा।

कोरोना संक्रमण से बचाएगा टीकाकरण व एहतियात का यह पांच मंत्र...

टीकाकरण के साथ एहतियात अपनाएं कोरोना से समुदाय को सुरक्षित बनाएं

कौशांबी। कोविड टीकाकरण के एक साल पूरे होने पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन-उत्तर प्रदेश के कोविड टीकाकरण के ब्रांड एंबेस्डर व केजीएमयू के रेस्परेटरी मेडिसिन विभाग के अध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त ने अपना अनुभव साझा किया । उन्होंने कहा कि साल भर के अनुभव और दुनिया के आ रहे अध्ययन से यह साफ पता चलता है कि कोविड-19 के संक्रमण से अगर खुद के साथ घर-परिवार व समुदाय को सुरक्षित रखना है तो कोविड टीकाकरण कराना सभी पात्र लोगों के लिए बहुत जरूरी है । टीकाकरण के साथ जरूरी प्रोटोकाल (पाँच मंत्र) का पालन भी सभी की भलाई के लिए आवश्यक है । ज्ञात हो कि 16 जनवरी 2021 से शुरू हुए कोविड टीकाकरण के पहले दिन पहला टीका डॉ. सूर्यकान्त ने लगवाया था। डॉ. सूर्यकान्त का कहना है कि कोविड की पहली लहर में तो बचाव का कोई टीका था ही नहीं लेकिन दूसरी लहर में ज्यादातर वही लोग गंभीर रूप से कोरोना की चपेट में आए जिन्होंने टीका नहीं लगवाया था । देश में इसबीच कोरोना एक बार फिर तेजी से पाँव पसार रहा है । ऐसे में अभी हाल ही में मुंबई के एक अस्पताल से आए आँकड़े बताते हैं कि अस्पताल में भर्ती होने वाले 95 फीसद कोरोना संक्रमित ने टीके की दोनों डोज नहीं लगवा रखी थी । इसलिए सभी से यही अपील है कि संक्रमण को रोकने के लिए जब जिसकी बारी आए टीकाकरण जरूर कराएं । टीका कोरोना से सुरक्षा तो प्रदान ही करेगा और अगर उसके बाद भी कोरोना की चपेट में आते हैं तो ऐसी गंभीर स्थिति नहीं बनेगी की अस्पताल में भर्ती होने की नौबत आए । डॉ. सूर्यकान्त का कहना है कि देश के साथ ही प्रदेश ने एक साल के भीतर अभियान चलाकर ज्यादा से ज्यादा लोगों को टीका लगाने का कीर्तिमान बनाया है । इसे अभी आगे भी जारी रखना है ताकि कोरोना को पूरी तरह से खत्म करने में देश कामयाब बन सके । उन्होंने कहा कि अगर प्रदेश की बात करें तो 18 साल से अधिक उम्र के करीब पौने पंद्रह करोड़ लोगों को टीका लगाना था जिसमें से करीब 13.71 करोड़ (93 फीसद) को पहली डोज लगाई जा चुकी है और 8.56 करोड़ (58 फीसद) को दोनों डोज लग चुकी है । 10 जनवरी से फ्रंट लाइन और हेल्थ केयर वर्कर के साथ ही 60 साल से अधिक उम्र के गंभीर बीमारी से ग्रसित बुजुर्गों को प्री काशन डोज (एहतियाती डोज) लगाई जा रही है, जिसके तहत अब तक करीब 3.84 लाख लोगों ने इस डोज को भी अपनाया है । 15 से 18 साल के किशोर-किशोरियों का भी टीकाकरण भी इसी माह तीन जनवरी से शुरू हुआ है । प्रदेश में इस श्रेणी के करीब 1.40 करोड़ बच्चों को टीका लगना है, जिसमें से 12 दिन में लगभग 50 लाख बच्चों का टीकाकरण किया जा चुका है । 12 साल से कम उम्र के बच्चों का टीकाकरण अभी नहीं चल रहा है, ऐसे में घर के सभी बड़ों की जिम्मेदारी है कि वह अपने साथ उन छोटे बच्चों की सुरक्षा के लिए टीके की निर्धारित डोज जल्दी से जल्दी लगवा लें।

पाँच जरूरी मंत्र अपनाएं कोरोना से समुदाय को सुरक्षित बनाएं

कौशाम्बी। डॉ सूर्यकान्त का कहना है कि यह बात शुरू से बताई जा रही है कि कोरोना को मात देना है तो दो काम हाथों के लिए बहुत जरूरी हैं और दो काम पैरों के लिए । इसके तहत सबसे पहले तो किसी से भी हाथ मिलाने की जगह नमस्कार करना है और दूसरा हाथों को बार-बार साबुन-पानी से धुलते रहना है । तीसरा मंत्र यह है कि पैरों को भीड़भाड़ में जाने से रोकना है और चौथा एक दूसरे से दो गज की दूरी बनाए रखनी है । पाँचवाँ और आखिरी सबसे जरूरी मंत्र है कि मास्क से परेशान हुए बगैर उसका पालन करें क्योंकि कोरोना हर जगह और हर वक्त ताक लगाए बैठा है । जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाते हुए सार्वजनिक जगहों पर हमेशा मास्क लगाकर रखें । यह कोरोना ही नहीं बल्कि वायु प्रदूषण व टीबी-निमोनिया समेत कई अन्य संक्रामक बीमारियों से भी बचाएगा।

तहरीक फरोग ए इस्लाम शाखा कौशांबी की जानिब से गरीबों को बांटें गए गर्म कपड़े

अखंड भारत संदेश

करारी कौशाम्बी। तहरीक फरोगे इस्लाम शाखा कौशांबी ने खलीफा ए हुजूर ताजुश शरिया हजरत अल्लामा मुफ़्ती खुशनूद आलम एहसानी रजवी काजी-ए-शहर कौशाम्बी की सरपरस्ती और हाफि ज राहत खान रजवी की सदारत में 16 जनवरी को सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक गरीबों और जरूरत मंदों में गर्म कपड़े,कंबल,रजाई,स्वेटर आदि का वितरण किया तहरीक के अध्यक्ष हाफि ज राहत खान रजवी ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि हम इस गर्म कपड़े बांटने का काम पूरी ठंडी इन शा अल्लाह हर रविवार को करेंगे।तहरीक के सरपरस्त मुफ्ती साजिद कादरी ने कहा कि हमारी कोशिश है कि जहां तक हो सके कोई भी गरीब इस सर्द मौसम में ठंड से परेशान न हो। तंजीम के निगराँ हाफि ज जहीर साहब ने बताया कि ये काम तंजीम हर इतवार को सुबह

ठंड में गरीबों को वितरण करते गर्म कपड़े

10 बजे से दोपहर 2 बजे तक पूरे ज़िला में अलग अलग जगहों पर कैंप लगा कर करेगी। तहरीक के पेज से हर तहसील के जिम्मेदारों के नंबर की सूची जारी करदी गई है जो भी जरूरत मन्द हैं वो अपने इलाके के निगरा से संपर्क कर के कपड़ा बैंक कैंप के पते पर आकर अपना मन पसंद कपड़ा ले जा सकते हैं,अगर किसी जरूरत मन्द को आने में दिक्कत हो तो वो जिम्मेदारों को कॉल करें हमारी तंजीम का सदस्य कपड़ा जरूरत मन्द के घर तक पहुंचाने की कोशिश करेगा। और साथ ही साथ हम ऐसी बस्तियों में भी जाएंगे जहां जरूरत मन्द मौजूद हों। इस मौके पर शहर काजी के पुत्र शैख मोहम्मद मियां कादरी तंजीम के सदस्य में हाफि ज शाहनवाज,मोहम्मद आमिर, मोहम्मद राशिद, मोहम्मद गुफरान, मोहम्मद नदीम, अहमद हसन आदि मौजूद रहे।

जनपद स्तर पर चलाये जा जा रहे अभियान में चेकिंग के दौरान की कार्यवाही

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार जनपद स्तर पर चलाये जा रहे अभियान के क्रम में विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एंव सोशल डिस्टेसिंग का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया, जिनमें 164 वाहनों का ई चालान किया गया एवं 03 वाहनों का चालान कर 1500 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया साथ ही बिना मास्क लगाये घूमने एवं सरकार द्वारा जारी गाइड लाइन का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुये 04 व्यक्तियों से 500 रुपये जुर्माना वसूला गया।

आदित्य सिंह पटेल होंगे शहर पश्चिमी विधानसभा से समर्थ किसान पार्टी के उम्मीदवार

आदित्य सिंह पटेल प्रत्याशी ने कहा कि किसानों, गरीबों एवं आम जनता को अधिकार दिलाने के लिए करूंगा संघर्ष

प्रत्याशी चयन के बाद मौके पर उपस्थित पार्टी अध्यक्ष अजय सोनी वा अन्य

कौशाम्बी। शहर पश्चिमी विधानसभा प्रयागराज से आदित्य सिंह पटेल को समर्थ किसान पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया है। इसकी घोषणा सोमवार को पार्टी अध्यक्ष अजय सोनी ने कालिंदीपुरम राजरूपपुर में एक बैठक में किया। इस दौरान पार्टी के लोगों ने आदित्य सिंह पटेल को माला पहनाकर एवं लड्डू खिलाकर उन्हें विधानसभा चुनाव के लिए बधाई दी। इसके पूर्व पार्टी नेता अजय सोनी ने आदित्य सिंह पटेल को समर्थ किसान पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई और पार्टी के विचारधारा के अनुसार किसानों एवं गरीबों के लिए संघर्ष करने का निर्देश दिया। साथ ही सर्वसम्मति से आदित्य सिंह पटेल को शहर पश्चिमी प्रयागराज से समर्थ किसान पार्टी का उम्मीदवार घोषित किया जिसका सभी लोगों ने समर्थन किया। इस अवसर पर आदित्य सिंह पटेल ने कहा कि शहर पश्चिमी प्रयागराज में किसान, गरीब एवं आम जनता परेशान है और कोई इनकी सुनने वाला नहीं है। अगर क्षेत्र की जनता ने मुझे विधायक बनाया तो मै पूरे पांच सालों तक किसानों, गरीबों एवं आम जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष करूंगा और उनका जीवन खुशहाल बनाऊंगा। इस अवसर पर संजय सिंह, मायापति पांडेय, दिगंबर सिंह, प्रेम चन्द्र केसरवानी, मनोज सोनी, शिव शंकर दुबे, बंसल यादव, शफीक अहमद आदि मौजूद रहे।

निलंबित कोटे को निरस्त किए जाने की मांग

कौशांबी। नेवादा विकासखंड के गोपालपुर पनारा गांव के कोटेदार के धांधली की शिकायत पर जांच कराए जाने के बाद अधिकारियों ने कोटे की दुकान को निलंबित कर दूसरे कोटेदार के यहां कार्ड धारकों के राशन वितरण की व्यवस्था सम्बद्ध कर दी निलंबित कोटेदार की दुकान को बर्खास्त किए जाने की मांग ग्रामीणों ने की है बताते चलें कि शिकायतकर्ता कृपाशंकर शुक्ला के पत्र को संज्ञान लेकर जिला पूर्ति अधिकारी के आदेश दिनांक 28.12.2021 द्वारा नेवादा ब्लाक के ग्राम पनारा गोपालपुर के विक्रेता इंदर लाल की दुकान को विभाग द्वारा जांच टीम गठित कर निलंबित किया गया था। विभाग द्वारा गठित संयुक्त जांच टीम द्वारा सरकारी गल्ले की दुकान में गंभीर अनियमितताएं पाई गई इसके साथ यह भी पाया गया कि कोटे का संचालन विक्रेता द्वारा ना करके गांव के दबंग व्यक्ति सुशील कुमार पाठक द्वारा किया जा रहा है जो गांव के लोगों से मानक के विपरीत ज्यादा पैसे लेते हैं और कम अनाज वितरित करते हैं तथा लोगों द्वारा विरोध करने पर उनके साथ दुर्व्यवहार तथा गाली गलौज भी करते हैं शिकायतकर्ता तथा ग्राम सभा के कई लोग उक्त प्रकरण की शिकायत कई महीनों से कर रहे है फिर भी गांव के दबंग के व्यक्ति सुशील कुमार पाठक के प्रभाव के कारण विभाग द्वारा अभी तक मात्र केवल कोटे को निलंबित किया गया है कोटेदार तथा अवैध रूप से कोटे का संचालन कर रहे सुशील कुमार पाठक के ऊपर कोई भी विधिक कार्यवाही नहीं की गई जोकि निंदनीय तथा जनमानस के प्रतिकूल है गलत तरीके से कोटे की दुकान चलाने वाले सुशील कुमार पाठक पर मुकदमा दर्ज कराते हुए कोटा को बर्खास्त किए जाने की मांग शिकायतकर्ता के साथ साथ ग्रामीणों ने की है।

सेन्ट जोसफ स्कूल के ऊपर नही लागू होता है उच्च अधिकारियों का आदेश

अखंड भारत संदेश

सरकार द्वारा जनपद सहित समूचा उत्तर प्रदेश के समस्त स्कूल कॉलेज आगामी 23 जनवरी तक बंद करने का दिया है आदेश

शासन के निर्देश की अवहेलना कल स्कूल खोलने वाले प्रबंध तंत्र और प्रिंसिपल पर अभी तक शिक्षा अधिकारियों ने मुकदमा दर्ज करा कर मान्यता रद्द की नहीं की कार्यवाही

भरवारी कौशाम्बी। जिले में एक स्कूल संचालक ऐसा भी है जिसके ऊपर शासन सत्ता से लेकर अधिकारियों का आदेश नहीं लागू होता है अपने को तानाशाह समझने वाला स्कूल संचालक शीतकालीन छुट्टी के आदेश के बाद भी स्कूल खोलकर शिक्षण कार्य कर रहा है एक तरफ कोरोना महामारी दूसरी तरफ शीत लहर से छात्र परेशान है लेकिन स्कूल संचालक तानाशाही कर प्रतिदिन स्कूल खोल कर छात्रों को स्कूल पहुंचने का निर्देश दें रहा है जो शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ-साथ बड़े अधिकारियों की व्यवस्था पर बड़ा सवाल खड़ा कर रहा है समूचे उत्तर प्रदेश में भयंकर शीत लहर के चलते उत्तर प्रदेश सरकार ने संपूर्ण उत्तर प्रदेश में सभी स्कूल कॉलेज आगामी 23 जनवरी तक बंद करने का आदेश जारी किया है परन्तु जनपद कौशाम्बी स्थिति हाईवे पर इंग्लिश मीडियम स्कूल है जिसका नाम सेन्ट जोसफ स्कूल है सरकार द्वारा सभी कॉलेज बन्द करने का आदेश जारी किए जाने के बाद इस स्कूल के प्रबंधक तंत्र द्वारा सरकार के आदेश को नही मानता है लेकिन उक्त स्कूल के प्रबंध तंत्र और प्रिंसिपल के ऊपर किसी भी उच्च अधिकारियों का आदेश कोई मायने नही रखता है इतना ही नहीं स्कूल संचालक और प्रिंसिपल के तानाशाही के बाद भी शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने सरकारी आदेश की अवहेलना करने के आरोप में प्रबंध तंत्र और प्रिंसिपल पर मुकदमा दर्ज कराकर कार्रवाई नहीं की है शासन के निर्देश की अवहेलना करने वाले स्कूल की मान्यता रद्द किया जाना भी आवश्यक है। वही कॉलेज में शिक्षा ग्रहण कर रहे भरवारी निवासी अभिभावक से वातार्लाप किया गया तो उन्होंने भी नियम विरुद्ध स्कूल खोलने पर आपत्ति जाहिर किया और बोले कि सभी कॉलेज इस शीत लहर के चलते बन्द है वही इस कॉलेज को सुचारू रूप से खोलकर चलाने का आदेश किस अधिकारी ने दिया है क्या जिलाधिकारी कौशाम्बी अमित कुमार सिंह इसकी जांच कर उक्त कॉलेज के ऊपर कार्यवाही करेंगे। हालांकि समूचे जनपद में शासन द्वारा बेसिक से लेकर डिग्री कॉलेज तक स्कूल शीत लहर के चलते बन्द करने का आदेश दिया गया है जिसको यह स्कूल संचालक मानने को तैयार नही है शासन का निर्देश ना मानने वाले इस स्कूल के लिए अलग से आदेश जारी करना चाहिए शासन के निर्देश के बावजूद स्कूल खोले जाने से अभिभावकों में भी रोष ब्याप्त है।

संपादक की कलम से

मुद्देविहीन चुनावों की त्रासदी कब तक?

कोरोना महामारी की तीसरी लहर के बीच पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों की घोषणा हो चुकी है, लेकिन सबसे बड़ी विडम्बना जो हर बार की तरह इस बार भी देखने को मिल रहा है, वह है इन चुनावों का मुद्दाविहीन होना। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड से लेकर गोवा, मणिपुर और पंजाब तक में टिकटों की बंदरबांट और उन्हें हासिल करने के लिए दलबदल की लहर शुरू हो गई है। दुनिया के लगभग हर बड़े लोकतंत्र में पार्टियां अपने उम्मीदवारों का चयन निर्वाचन क्षेत्र में पार्टी सदस्यों और स्थानीय लोगों की राय, जनअपेक्षाओं और उम्मीदवारों की योग्यता के आधार पर करती हैं, लेकिन भारत में ऐसा नहीं है। यहां पार्टियां नेताओं की परिवारवादी राजनीतिक परम्परा, उनके जातीय आधार, बाहुबल, धनबल, धार्मिक एवं साम्प्रदायिक आधार पर उम्मीदवारों का चयन करती हैं, जिससे भारत में लोकतांत्रिक मूल्य दिनोंदिन कमजोर होते जा रहे हैं। कभी-कभी लगता है समय का पहिया तेजी से चल रहा है जिस प्रकार से घटनाक्रम चल रहा है, वह और भी इस आभास की पुष्टि करा देता है। पर समय की गति न तेज होती है, न रुकती है। हां चुनाव घोषित हो जाने से तथा प्रक्रिया प्रारंभ हो जाने से जो क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं हो रही हैं उसने ही सबके दिमागों में सोच की एक तेजी ला दी है। प्रत्याशियों के चयन व मतदाताओं को रिझाने के कार्य में तेजी आ गई है, लेकिन जनता से जुड़े जरूरी मुद्दों पर एक गहरा मौन पसरा है। न गरीबी मुद्दा है, न बेरोजगारी मुद्दा है। महंगाई, बढ़ता भ्रष्टाचार, बढ़ता प्रदूषण, राजनीतिक अपराधीकरण, आतंकवाद, युद्ध, कोरोना महामारी जैसे ज्वलंत मुद्दे नदारद हैं। पांच राज्यों के रचाए जा रहे मतदान का पवित्र कार्य सन्निकट है। परम आवश्यक है कि सर्वप्रथम राष्ट्रीय वातावरण अनुकूल बने। देश ने साम्प्रदायिकता, आतंकवाद तथा घोटालों के जंगल में एक लम्बा सफर तय किया है। उसकी मानसिकता घायल है।

संगीत एवं नृत्य परंपरा का सितारा थे बिरजू

ललित गर्ग

कत्थक के सरताज पंडित बिरजू महाराज नहीं रहे। उनके निधन से आज भारतीय संगीत की लय थम गई, सुर मौन हो गए, भाव शून्य हो गए। वे शास्त्रीय कथक नृत्य के लखनऊ कालिका-बिन्दादिन घराने के विश्वप्रसिद्ध अग्रणी नर्तक थे, जिन्होंने इस गौरवशाली परंपरा की सुगंध विश्व भर में प्रसारित की। बिरजू महाराज के अनंत में विलीन होने से गहन सन्नाटा छा गया है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं कथक नृत्य का दुनिया में विशिष्ट स्थान है, क्योंकि यह सत्यं, शिवं और सौन्दर्य की युगपत उपासना की सिद्ध एवं चमत्कारी अभिव्यक्ति है।

बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी, 1938 को कत्थक नृत्य के लिये प्रसिद्ध जगन्नाथ महाराज के घर हुआ था, जिन्हें लखनऊ घराने के अच्छन महाराज कहा जाता था। ये रायगढ़ रजवाड़े में दरबारी नर्तक हुआ करते थे। बिरजू का नाम पहले दुखहरण रखा गया था, क्योंकि ये जिस अस्पताल पैदा हुए थे, उस दिन वहाँ उनके अलावा बाकी सब कन्याओं का ही जन्म हुआ था, यानी गोपियों के बीच श्रीकृष्ण, उसी कारण उनका नाम बृजमोहन रख दिया गया। यही नाम आगे चलकर बिरजू और बिरजू महाराज हो गया। वे भारतीय संगीत जगत का एक उज्जवल नक्षत्र थे। पारम्परिक कौशल, रचनात्मकता एवं संवेदनशीलता से युक्त कालिका-बिन्दादिन घराने के प्रतिनिधि

गायक एवं नर्तक पद्मविभूषण बिरजू महाराज गायन एवं कथक नर्तन में कल्पनाशील विस्तार, गहन अलौकिकता और अचूक कलात्मक संयम एवं वैभव के लिये विख्यात हैं। हिन्दुस्तान के कथक नृत्य एवं गायन में सात दशकों के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि वे अपनी कला के अकेले महारथि थे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत एवं कला को लोकरंजन का साधन बनाने के लिये क्लिष्टता को दूर उसे सुगम बनाया। ईश्वर को आलोकपुंज मानते हुए उससे एकाकार होकर अपनी कला को प्रस्तुति देते हुए बिरजु महाराज ऐसा प्रतीत कराते थे, मानो उनका ईश्वर से सीधा साक्षात्कार हो रहा है। यही कारण है कि उनकी नृत्यकला एवं संगीत साधना से रू-ब-रू होने वाले असंख्य लोग उनकी साधना में गौता लगाते हुए मंत्रमुग्ध हो जाते थे। ऐसे गुणों के भंडार पंडित बिरजू महाराज के जीवन का वर्णन करना संभव नहीं। हम सभी जानते हैं कि बिरजू महाराज कथक नृत्य के एक मुर्धन्य कलाकार थे। परंतु इसके इलावा भी जो उनके अलग विषयों में भी दखल था जिनमें उनका तबला वादन भी अनूठा एवं बेजोड़ था। और उनकी ठुमरी गायकी पर जो दखल था वह हम सभी भली भांति जानते हैं। कुछ फिल्मों में भी उन्होंने अपना गायकी का परिचय दिया हैं। उनके कथक नृत्य के तो सभी दीवाने थे पर उनका यह चौमुखी विद्या गुण उन्हें सबसे अलग रखता था। जैसे संयम नटराज हमारे बीच से आज विदा लेकर चले गए। उनका यह स्थान कोई पूरा नहीं कर सकता। कत्थक संसार की एक पाठशाला आज वीरान हो गई। पंडित बिरजूजी कथक नर्तकों के महाराज परिवार के वंशज थे जिसमें अन्य प्रमुख विभूतियों में इनके दो चाचा व ताऊ, शंभु महाराज एवं लच्छू महाराज तथा इनके स्वयं के पिता एवं गुरु अच्छन महाराज भी आते हैं। हालांकि इनका प्रथम जुड़ाव नृत्य से ही है, फिर भी इनकी गायकी पर भी अच्छी पकड़ थी, तथा ये एक अच्छे शास्त्रीय गायक भी थे। इन्होंने कत्थक नृत्य में नये आयाम नृत्य-नाटिकाओं को जोड़कर उसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। इन्होंने कत्थक हेतु कलाश्रम की स्थापना भी की है। इसके अलावा इन्होंने विश्वपर्यन्त भ्रमण कर सहस्त्रों नृत्य कार्यक्रम करने के साथ-साथ कत्थक शिक्षार्थियों हेतु सैंकड़ों कार्यशालाएं भी आयोजित की। उन्होंने कत्थक के साथ कई प्रयोग किए और फिल्मों के लिए कोरिओग्राफ भी किया। उनकी तीन बेटियाँ और दो बेटे हैं। अपने चाचा, शम्भू महाराज के साथ नई दिल्ली स्थित भारतीय कला केन्द्र, जिसे बाद में कत्थक केन्द्र कहा जाने लगा, उसमें काम करने के बाद इस केन्द्र के अध्यक्ष पद पर भी कई वर्षों तक आसीन रहे। तत्पश्चात 1998 में वहां से सेवानिवृत्त होने पर अपना नृत्य विद्यालय कलाश्रम भी दिल्ली में ही खोला। इनको उनके चाचाओं लच्छू महाराज एवं शंभु महाराज से प्रशिक्षण मिला, तथा अपने जीवन का प्रथम गायन इन्होंने सात वर्ष की आयु में दिया।

20 मई, 1947 को जब ये मात्र 9 वर्ष के ही थे, इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। परिश्रम के कुछ वर्षोपरान्त इनका परिवार दिल्ली में रहने लगा। बिरजू महाराज ने मात्र 13 वर्ष की आयु में ही नई दिल्ली के संगीत भारती में नृत्य की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था। उसके बाद उन्होंने दिल्ली में ही भारतीय कला केन्द्र में सिखाना आरम्भ किया। बिरजू महाराज की ख्याति फिल्मी दुनिया तक भी पहुंची और इन्होंने सत्यजीत राय की फिल्म शतरंज के खिलाड़ी की संगीत रचना की, तथा उसके दो गानों पर नृत्य के लिये गायन भी किया। इसके अलावा वर्ष 2002 में बनी हिन्दी फिल्म देवदास में एक गाने काहे छेड़ छेड़ मोहे का नृत्य संयोजन भी किया। इसके अलावा अन्य कई हिन्दी फिल्मों जैसे डेढ़ इश्किया, उमराव जान तथा संजय लीला भंसाली निर्देशित बाजी राव मस्तानी में भी कत्थक नृत्य के संयोजन किये। दिल तो पागल है, गदर एक प्रेम कथा जैसी हिट फिल्मों में अपने गायन और अपने नृत्य से इन फिल्मों में अपनी छाप छोड़ी। बिरजू महाराज को अपने क्षेत्र में आरम्भ से ही काफी प्रशंसा एवं सम्मान मिले, जिनमें 1986 में पद्म विभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा कालिदास सम्मान प्रमुख हैं। इनके साथ ही इन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं खैरागढ़ विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की मानद उपाधि मिली।

याद रखे देश महान पर्वतारोही और दिव्यांगों के मित्र को

आर.के. सिन्हा,

महान पर्वतारोही मेजर एचपीएस आहलूवालिया देश के 60 की उम्र पार कर गई पीढ़ी के लिए किसी नायक से कम नहीं थे। मेजर एचपीएस आहलूवालिया उस पर्वतारोही दल के सदस्य थे जिसने 20 मई 1965 को माउंट एवरेस्ट की चोटी को फतेह किया था। वह भारतीय सेना का पर्वतारोही दल था। यानी मेजर एचपीएस आहलूवालिया एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाले पहले भारतीयों में से एक थे। मतलब तेनजिंग नोर्गे और एडमंड हिलेरी के छह सालों के बाद भारतीय दल एवरेस्ट पर चढ़ा था। मेजर आहलूवालिया ने 1965 में पाकिस्तान के खिलाफ जंग में भी सक्रिय रूप से भाग भी लिया था। उन्होंने रणभूमि में दुश्मन सेना के दांत खट्टे कर दिए थे। उनका विगत शुक्रवार को निधन हो गया। वे 85 साल के थे। पाकिस्तान से जंग के दौरान उनके शरीर का एक हिस्सा पक्षाघात से ग्रस्त हो गया था। इससे वे विचलित नहीं हुए। वे आजीवन दिव्यांगजनों के पक्ष में काम करते रहे। उन्होंने राजधानी में इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर की स्थापना है। यह देश का अपनी तरह सबसे शानदार अस्पताल है। इस अस्पताल में रीढ़ की बीमारियों से संबंधित रोगों का इलाज होता है। अब आप खुद देख लें कि कोई इंसान एक जीवन में कितने सार्थक काम कर सकता है। मेजर आहलूवालिया का जीवन बेहद प्रेरक रहा। वे सैनिक, पर्वतारोही, लेखक और अस्पताल के संस्थापक थे। उनकी बात करते हुए हमें अपने देश के दिव्यांग जनों के हितों के बारे में संवेदनहीनता की मानसिकता को छोड़ना होगा। दिव्यांगजनों को भी बाकी नागरिकों की तरह ही देखा जाना चाहिए। उन्हें अहसानों की जरूरत नहीं। भारत में मानसिक और शारीरिक तौर पर विकलांग लोगों को रोजाना किसी न किसी तरह के भेदभाव का सामना करना ही पड़ता है। क्या हमारे देश के विकलांगों के मन-माफिक घरों या कमर्शियल इमारतों का निर्माण हो रहा है? इस सवाल का जवाब नकारात्मक ही मिलेगा। कारण यह है कि हमारे यहाँ दिव्यांग जनों के हितों को लेकर सरकार से लेकर समाज का रवैया ठंडा सा ही पड़ा रहता है। मेजर एचपीएस आहलूवालिया जैसे जागरूक नागरिक तो गिनती के हैं जो सरकार और समाज को जगाते रहते हैं। उन्हें बताते रहते हैं कि दिव्यांगजनों को उनकी हालत पर छोड़ा नहीं जा सकता। देश में 16 किस्म की विकलांगतायें है। मेजर आहलूवालिया स्वयं भी व्हीलचेयर पर चलते थे। वे मानते थे कि व्हीलचेयर पर चलने वाली आबादी को अपने घर से बाहर लाने, कॉलेज या दफ्तर जाने के लिए बस पकड़ने, शापिंग कांप्लेक्स जाने या अन्य सार्वजनिक इमारतों में प्रवेश की वैसी ही सुविधा होनी चाहिए जैसी सामान्य लोगों के लिए होती है। लेकिन, स्थिति यह है कि अधिकतर स्थानों पर दिव्यांग व्यक्ति आसानी से कहीं आ जा ही नहीं सकता। हमारे यहां इनके लिए हाई-राइज बिल्डिंगों और घरों में पर्याप्त जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करवाने को लेकर गंभीरता से नहीं सोचा जा रहा। यही स्थिति बुजुर्गों की भी है। हमारे देश में बुजुर्गों और विकलांगों दोनों की अनदेखी हो रही है। अब कुछ दिनों के बाद केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण केन्द्रीय बजट पेश करेंगी। अगर वो अपने बजट प्रस्तावों में उन बिल्डरों को टैक्स में राहत दें जो दिव्यांगजनों को किसी तरह से मदद दे रहे हैं, तो यह एक तरह से मेजर एचपीएस आहलूवालिया जैसे विकलांगों और विकलांग सेवियों को सच्ची श्रधांजलि ही होगी। भारत में रीयलएस्टेट सेक्टर ने बीते चंदेक दशकों के दौरान लंबी छलांग लगाई है, पर उन रीयल एस्टेट कंपनियों को उंगुलियों पर गिना जा सकता है जो विकलांगों तथा बुजुर्गों की सुविधा का ध्यान रखकर ही अपने प्रोजेक्टों का निर्माण कर रही हैं। अब भी आपको इस तरह की आवासीय और कमर्शियल इमारतें कम ही मिलेंगी जिनमें विकलांगों की व्हीलचेयर को लिफ्ट के अंदर लेकर जाया जा सकता है। लिफ्ट में इतना कम स्पेस रहता है कि व्हीलचेयर को उसके अंदर लेकर जाना मुमकिन ही नहीं होता। बाथरूम और किचन में कैबिनेट इतनी ऊंचाई में होते हैं कि विकलांग इंसान के लिए उनका इस्तेमाल करना बेहद कठिन होता है। मेजर एचपीएस आहलूवालिया के बहाने यह भी कहना पड़ रहा है कि हमें अपने यहां पर्वतारोहियों को भी गति देनी होगी। उन पवार्तारोहियों को उनका हक देना होगा जिनकी खास उलब्धियां रही हैं। जिन दो पर्वतारोहियों ने माउंट एवरेस्ट को पहली बार 29 मई 1953 को फतेह किया था उनके नाम पर राजधानी में सड़कों के नाम हैं। सर एडमंड हिलेरी के नाम पर दिल्ली के चाण्क्यपुरी ए?या में सड़क है। वे 1985-1989 के बीच न्यूजीलैंड के भारत में हाई कमिश्नर थे। एडमंड हिलेरी के दफ्तर के दरवाजे पर्वतारोहियों, खिलाड़ियों,लेखकों वगैरह के लिए हमेशा खुले रहते थे। वे बेहद लोकप्रिय डिप्लोमेट थे। चाण्क्यपुरी में ही तेनजिंह नोर्गे मार्ग भी है।

उम्मीद की जाये कि अब राजधानी के किसी भाग में हम मेजर आहलूवालिया के नाम पर कोई सड़क या संस्थान को देखेंगे। सब जानते हैं कि बछेन्द्री पाल एवरेस्ट की ऊंचाई को छूने वाली पहली भारतीय महिला पर्वतारोही थीं । उससे प्रभावित होकर हरियाणा की बेटी अनीता कुंडू ने भी माउंट एवरेस्ट को फतह कर लिया है। वह तिरंगे को तीन बार एवरेस्ट की चोटी पर और सातों महाद्वीपों के सबसे ऊंचे शिखरों पर भी लहरा चुकी है।

उत्तर प्रदेश की सियासत में असल मुद्दों का क्या?

रामेश्वर

हाल ही में होने जा रहे पांच राज्यों के विधान सभा चुनाव के निर्वाचन आयोग द्वारा तिथि की घोषणा ने उत्तर प्रदेश के सियासी तापमान को बहुत बढ़ा दिया है। इस समय उत्तर प्रदेश की राजनीति में केवल दल-बदल का विषय चर्चा में है, इससे पहले जनता को 80 बनाम 20 की लड़ाई में फंसाया गया, उससे पहले अब्बाजान-चच्चाजान, लुंगी-टोपी, जिन्ना जैसे अनावश्यक विषयों में फंसाया गया, आम जनमानस का ध्यान भटकाया गया जिसमे असल मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। आचार संहिता लगने के बाद से नेताओं में पद लोलुपता की जो जिज्ञाषा दिख रही है वह हर व्यक्ति को परेशान कर रही है। भारतीय जनता पार्टी के टिकट घोषणा से पहले अनेक मंत्रियों एवं विधायकों का पार्टी के पद एवं सदस्यता से इस्तीफा देना उत्तर प्रदेश में चुनाव से पहले बहुत बड़े बदलाव को रेखांकित कर रहा है। इन नेताओं द्वारा पार्टी छोड़ने के पीछे एक विषय को आधार बनाया गया है, सबने सत्ता पक्ष में रही योगी सरकार पर दलितों, पिछड़ों, गरीबों, महिलाओं, किसानों के उत्पीड़न का आरोप लगाया है। सत्ता पक्ष द्वारा इन दावों का खंडन करते हुए इन पार्टी छोड़ने वाले नेताओं की असफलता को मुख्य कारण बताया जा रहा है और कहा जा रहा है कि इन सारे नेताओं ने अपने-अपने क्षेत्र में विकास कार्य

नही किया इसलिए इनके टिकट कटने वाले थे, टिकट कटने के भय से इन लोगों ने पार्टी छोड़ दी। आज नेताओं के पार्टी छोड़ने और नयी पार्टियों से जुड़ने के विषय के साथ-साथ अनेक ऐसे प्रश्न हैं जो इन नेताओं और सत्ता पक्ष की मंसा पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। सबसे अहम सवाल सत्ता पक्ष से यह है कि क्या सत्ता पक्ष द्वारा पिछले पांच सालों में इन पार्टी छोड़ने वाले नेताओं की कार्यों को देखते हुए इनको पद से पहले ही क्यों नही हटाया गया ? क्या इन नेताओं को पिछले पांच वर्षों में पार्टी द्वारा कोई चेतावनी दी गयी थी ? नेताओं की कार्यशैली को देखते हुए क्या 325 विधायकों वाली पूर्ण बहुमत की भाजपा सरकार द्वारा किसी को पार्टी से निकाला गया ? दूसरे अहम प्रश्न इन पार्टी छोड़ने वाले नेताओं से है कि क्या इन पांच सालों में योगी जी को दलितों, पिछड़ों के हितों से जुड़ी एक भी समस्या के लिए पत्र लिखे ? क्या इन नेताओं ने पिछड़ों, दलितों, शोषितों, गरीबों, बेरोजगारों की मांग को लेकर अपनी सरकार के खिलाफ कोई मोर्चा खोला ? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो योगी सरकार और बागी विधायकों एवं मंत्रियों के एक छिपे हुए स्वरुप को उजागर करते हैं। इन नेताओं का मूल उद्देश्य पार्टी छोड़ने एवं दूसरी पार्टियों में अपने निजी हित को तलाशने एवं लोगों के ध्यान को भ्रमित करना है। इन नेताओं ने पिछले पांच सालों में अपने समाज की कोई चिंता नही की न ही सरकार का विरोध कर पाये साथ ही सरकार ने भी जाति आधारित वोट बैंक के लालच में इन विधायकों एवं मंत्रियों के कार्यों की कभी कोई समीक्षा तक नही किया जिससे आम जनमानस की समस्याएं यथावत बनी रही। इन नेताओं के अपने समाज से जुड़े विषयों का अवलोकन करें तो उनहत्तर हजार शिक्षक भर्ती में हो रही आरक्षण सम्बन्धी अनियमितता, किसान की खाद की समस्या, लखीमपुर में किसानों को कुचलने की घटना, लखीमपुर के चीरहरण की घटना, आजमगढ़ में दलित बस्ती को उजाड़ने की घटना, प्रदेश में बढ़ रहा कुपोषण, महिला उत्पीड़न में हो रही वृद्धि का मामला, पुलिस एवं न्यायिक हिरासत में बढ़ते मृत्यु की दर, आवारा पशुओं से फसल बबार्दी की समस्या, निजीकरण से उत्पन्न सामाजिक विसंगति जैसे अनेक विषय थे और आज भी हैं जिस पर ये जनप्रतिनिधि न कभी अपने घर बाहर से निकले और न ही कभी इन मुद्दों पर मिडिया या सरकार से अपना पक्ष रखते दिखे। चुनाव पूर्व उनका पार्टी से निकलकर दूसरी पार्टियों में जाना इनकी सत्ता की आकांक्षा की परिणीति मात्र है। भारतीय जनता पार्टी द्वारा 107 प्रत्याशियों की सूची जारी की गयी।

कोरना काल: जान और जहान....

महेश शर्मा

ऐसे वक्त में जब कोरोना संक्रमण की तीसरी लहर में संक्रमितों का आंकड़ा ढाई लाख पार कर गया है, प्रधानमंत्री का विभिन्न मुख्यमंत्रियों के साथ महामारी से लड़ाई के लिये बैठक करना तार्किक नजर आता है। एक सप्ताह में यह प्रधानमंत्री की दूसरी बैठक थी, जिसमें कहा गया कि संक्रमण से बचाव हेतु प्रतिबंधों व उपायों को लागू करते वक्त ध्यान रहे कि स्थानीय स्तर पर लोगों की जीविका पर प्रतिकूल असर न पड़े। स्मरण रहे कि पहली लहर के दौरान लगे सख्त लॉकडाउन से नयी तरह का मानवीय संकट पैदा हुआ था। देश ने विभाजन के बाद पलायन की सबसे बड़ी त्रासदी को देखा। अब तक भी आर्थिक दृष्टि से स्थिति पूरी तरह सामान्य नहीं हो पायी है। तीसरी लहर के दौरान राज्य सरकारों को स्थानीय प्रशासन को निर्देश देने होंगे कि संक्रमण की कड़ी तोड? के लिये एहतियाती उपाय जरूरी हैं, लेकिन जान के साथ जहान की रक्षा भी जरूरी है। देर-सवेर संक्रमण का दायरा सिमटेगा, लेकिन अर्थव्यवस्था को लगी चोट से उबरने में लंबा वक्त लग सकता है।

मगर नये संक्रमण को लेकर जैसी दुविधा शासन-प्रशासन के सामने है, वैसी ही दुविधा देश की श्रमशील आबादी के सामने है। हालांकि, केंद्र व राज्य सरकारें आश्वासन दे रही हैं कि पूरा व सख्त लॉकडाउन नहीं लगाया जायेगा, लेकिन दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है। पहली लहर की सख्त बंदिशों से महानगरों में श्रमिकों की त्रासदी की कसक अभी मिटी नहीं है। यही वजह है कि देश के कई राज्यों से श्रमिकों के पलायन की खबरें मीडिया में तैरती रही हैं। जाहिर है असुरक्षा बोध को दूर करने का आश्वासन उन उद्योगों की तरफ से श्रमिकों को नहीं मिल पाया, जहां वे काम करते हैं। ऐसे संकट के दौर में उद्योग व श्रमिकों के रिश्ते महज आर्थिक आधार पर न देखे जायें और उन्हें मानवीय संकट के संदर्भ में देखकर ऐसे आश्वासन दिये जाएं कि वे ऊहापोह की स्थिति से निकल सकें। निस्संदेह, कोरोना की तीसरी लहर ने देश के सामने नये सिरे से बड़ी चुनौती पैदा की है, अच्छी बात यह है कि तेज संक्रमण के बावजूद अस्पताल में भर्ती होने वाले लोगों की संख्या में कमी आई है। निस्संदेह, इसके मूल में देश में चला सफल टीकाकरण अभियान भी है। आंकड़े बता रहे हैं कि मरने व अस्पताल में भर्ती होने वाले लोगों में बड़ी संख्या उन लोगों की है जिन्होंने वैक्सीन नहीं लगवाई थी। अब वे लोग भी टीका लगवा रहे हैं।

विचार शून्य राजनीति की चुनावी नाटकीयता

राजकुमार सिंह

दशकों तक नीति-सिद्धांत-कार्यक्रम के आवरण में लिपटी रही राजनीति अब पूरी तरह नाटकीय हो गयी है। खासकर चुनाव के समय तो यह नाटकीयता चरम पर होती है। देश की राजनीति को दिशा देते रहे उत्तर प्रदेश के राजनेताओं का यह आलम है कि लगभग पांच साल तक सत्ता-सुख भोग चुकने के बाद ऐन चुनाव से पहले उन्हें अहसास होता है कि वे अपने-अपने वर्गों की सेवा करने के बजाय उनका शोषण करने वाली व्यवस्था का ही हिस्सा बने हुए थे। तीन दिन में योगी आदित्यनाथ मंत्रिमंडल से इस्तीफा देनेवाले तीनों मंत्रियों के इस्तीफे की समान भाषा से उनकी समझ के साथ ही मंसूबों पर भी सवाल उठते ही हैं। अपने-अपने जाति-वर्ग के बड़े नेता माने जानेवाले ये तीनों महानुभाव पिछले विधानसभा चुनाव से पहले ही अचानक निष्ठा बदल कर भाजपाई बने थे। जाहिर है, तब भी उन्होंने अपने समुदाय के हित में पाला बदलने का दावा किया था, जैसा कि अब भाजपा को अलविदा कहते समय किया है। वैसे इन सभी ने दावा किया है कि मंत्री पद पर रहते हुए अपने दायित्व का पूरी निष्ठा से निर्वहन किया। ऐसे में यह स्वाभाविक प्रश्न अनुत्तरित है कि अगर पिछड़े, दलित, युवाओं, बेरोजगारों आदि वर्गों की योगी सरकार में निरंतर अनदेखी हुई तो ये महानुभाव किस दायित्व का निर्वहन कर रहे थे, और क्यों? कई दलों की परिक्रमा कर चुके इन महानुभावों से पूछा जाना चाहिए कि नेताजी, आखिर आपकी राजनीति क्या है! आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि भाजपा और उसके मित्र दलों को अलविदा कह कर मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी में शामिल होने वाले विधायक भी खुद को अपने-अपने जाति-वर्गों के हितों के प्रति चिंतित दिखा रहे हैं–बिना इस स्वाभाविक प्रश्न का उत्तर दिये कि पांच साल तक वे अपने लोगों के हितों के साथ अन्याय के मूकदर्शक क्यों बने रहे? असहज सवालों से मुंह चुराना हमारी राजनीति की पुरानी फितरत है।

फिर भी, चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही उत्तर प्रदेश भाजपा में जैसी भगदड़ मची है,उसे सामान्य नहीं माना जा सकता–खासकर तब जबकि केंद्र में भाजपा सरकार का कार्यकाल अभी दो वर्ष से भी ज्यादा शेष है।

कमाल खान के नहीं होने का अर्थ

राजेश बादल

मैं पूछता हूँ तुझसे , बोल माँ वसुंधरे ,
तू अनमोल रत्न लीलती है किसलिए ?

कमाल खान अब नहीं है। भरोसा नहीं होता। दुनिया से जाने का भी एक तरीका होता है। यह तो बिल्कुल भी नहीं। जब से खबर मिली है ,तब से उसका शालीन ,मुस्कुराता और पारदर्शी चेहरा आँखों के सामने से नहीं हट रहा। कैसे स्वीकार करूँ कि पैंतीस बरस पुराना रिश्ता टूट चुका है। रूचि ने इस हादसे को कैसे बर्दाश्त किया होगा ,जब हम लोग ही सदमे से उबर नहीं पा रहे हैं।यह सोच कर ही दिल बैठा जा रहा है।मुझसे तीन बरस छोटे थे ,लेकिन सरोकारों के नजरिए से बहुत ऊँचे। पहली मुलाकात कमाल के नाम से हुई थी,जब रूचि ने जयपुर नवभारत टाइम्स में मेरे मातहत बतौर प्रशिक्षु पत्रकार ज्वाइन किया था। शायद 1988 का साल था । मैं वहाँ मुख्य उप संपादक था। अँगरेजी की कोई भी कॉपी दो,रूचि की कलम से फटाफट अनुवाद की हुई साफ सुथरी कॉपी मिलती थी। मगर,कभी कभी वह बेहद परेशान दिखती थी। टीम का कोई सदस्य तनाव में हो तो यह टीम लीडर की नज? से छुप नहीं सकता। कुछ दिन तक वह बेहद व्यथित दिखाई दे रही थी। एक दिन मुझसे नहीं रहा गया। मैने पूछा,उसने टाल दिया। मैं पूछता रहा,वह टालती रही।एक दिन लंच के दरम्यान मैंने उससे तनिक क्षुब्ध होकर कहा , रूचि ! मेरी टीम का कोई सदस्य लगातार किसी उलझन में रहे ,यह ठीक नहीं।उससे काम पर उल्टा असर पड़ता है।उस दिन उसने पहली बार कमाल का नाम लिया।कमाल नवभारत टाइम्स लखनऊ में थे।दोनों विवाह करना चाहते थे। कुछ बाधाएँ थीं । उनके चलते भविष्य की आशंकाएँ रूचि को मथती रही होंगीं । एक और उलझन थी । मैनें अपनी ओर से उस समस्या के हल में थोड़ी सहायता भी की । वक़्त गुज?ता रहा। रूचि भी कमाल की थी।कभी अचानक बेहद खुश तो कभी गुमसुम। मेरे लिए वह छोटी बहन जैसी थी।पहली बार उसी ने कमाल से मिलवाया।मैं उसकी पसंद की तारीफ किए बिना नहीं रह सका।मैने कहा, तुम दोनों के साथ हूँ।अकेला मत समझना।फिर मेरा जयपुर छूट गया। कुछ समय बाद दोनों ने ब्याह रचा लिया।अक्सर रूचि और कमाल से फोन पर बात हो जाती थी। दोनों बहुत खुश थे।

इसी बीच विनोद दुआ का दूरदर्शन के साथ साप्ताहिक न्यूज पत्रिका परख प्रारंभ करने का अनुबंध हुआ।यह देश की पहली टीवी समाचार पत्रिका थी। हम लोग टीम बना रहे थे।

कुछ समय वरिष्ठ पत्रकार दीपक गिडवानी ने परख के लिए उत्तरप्रदेश से काम किया।अयोध्या में बाबरी प्रसंग के समय दीपक ही वहाँ थे। कुछ एपिसोड प्रसारित हुए थे कि दीपक का कोई दूसरा स्थाई अनुबंध हो गया और हम लोग उत्तर प्रदेश से नए संवाददाता को खोजने लगे। विनोद दुआ ने यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी । मुझे रूचि की याद आई। मैनें उसे फोन किया।उसने कमाल से बात की और कमाल ने मुझसे।संभवतया तब तक कमाल ने एनडीटीवी के संग रिश्ता बना लिया था।चूँकि परख साप्ताहिक कार्यक्रम था इसलिए रूचि गृहस्थी संभालते हुए भी रिपोर्टिंग कर सकती थी।कमाल ने भी उसे भरपूर सहयोग दिया।यह अदभुत युगल था ।दोनों के बीच केमिस्ट्री भी कमाल की थी।बाद में जब उसने इंडिया टीवी ज्वाइन किया तो कभी कभी फोन पर दोनों से दिलचस्प वातार्लाप हुआ करता था।एक ही खबर के लिए दोनों संग संग जा रहे हैं।टीवी पत्रकारिता में शायद यह पहली जोड़ी थी जो साथ साथ रिपोर्टिंग करती थी।जब भी लखनऊ जाना हुआ,कमाल के घर से बिना भोजन किए नहीं लौटा।दोनों ने अपने घर की सजावट बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से की थी। दोनों की रुचियाँ भी कमाल की थीं.एक जैसी पसंद वाली ऐसी कोई दूसरी जोड़ी मैंने नहीं देखी।जब मैं आज तक चैनल का सेन्ट्रल इंडिया का संपादक था,तो अक्सर उत्तर प्रदेश या अन्य प्रदेशों में चुनाव की रिपोर्टिंग के दौरान उनसे मुलाकात हो जाती थी।

एएफसी चैंपियंस लीग 2022 के ड्रॉ की घोषणा, मुंबई सिटी एफसी ग्रुप बी में

मुंबई। एएफसी चैंपियंस लीग 2022 के लीग ग्रुप स्टेज के लिए सोमवार को मलेशिया के कुआलालंपुर में ड्रॉ निकाला गया। मुंबई सिटी एफसी को ग्रुप बी में रखा गया है। इस ग्रुप की अन्य टीमें अल जजीरा (यूएई), अल शबाब (केएसए) और एयर फोर्स क्लब (आईआरक्यू) हैं। इस टूर्नामेंट में 40 टीमें हिस्सा ले रही हैं, जिन्हें चार टीमों के 10 समूहों में बांटा गया है। 10 समूहों को दो वर्गों पश्चिम क्षेत्र (ए-ई) और पूर्वी क्षेत्र (एफ-जे) में बांटा गया है।

मुंबई सिटी एफसी ने इंडियन सुपर लीग 2020/21 में लीग विनर्स शील्ड जीतकर 2022 एएफसी चैंपियंस लीग के लिए क्वालीफाई किया है। मुंबई की टीम पहली बार पश्चिम क्षेत्र से एशिया की सबसे बड़ी क्लब फुटबॉल प्रतियोगिता में हिस्सा लेगी। मुंबई सिटी इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाला दूसरा भारतीय क्लब है।

इस सप्ताह की शुरूआत में एएफसी द्वारा जारी संशोधित कार्यक्रम के अनुसार, पश्चिम क्षेत्र के 2022 एएफसी चैंपियंस लीग ग्रुप चरण मैच 7 अप्रैल, 2022 से 27 अप्रैल, 2022 तक खेले जाएंगे,जिसमें स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रतिबंधों को ध्यान में रखते हुए एक केंद्रीकृत स्थान पर डबल राउंड-रॉबिन मैच खेले जाएंगे। मुंबई के 2022 एएफसी चैंपियंस लीग ग्रुप स्टेज मैचों के तारीख और स्थान की घोषणा नियत समय पर की जाएगी। मुंबई सिटी एफसी के मुख्य कोच डेस बकिंघम ने कहा,"हम टूनामेंट को लेकर उत्सुक है। हम हमेशा सर्वश्रेष्ठ के साथ प्रतिस्पर्धा करना चाहते हैं और एएफसी चैंपियंस लीग में भाग लेने से हमें ऐसा करने की अनुमति मिलती है। हमारा ध्यान अभी इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) में अच्छा प्रदर्शन करने पर है और जब हम एएफसी चैंपियंस लीग में पहुंचेंगे, तो हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि हम मुंबई का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व करें और एशियाई मंच पर भारतीय फुटबॉल का अच्छा प्रदर्शन करें।" मुंबई सिटी एफसी के सीईओ कंदर्प चंद्रा ने कहा,"एशिया की प्रीमियर क्लब फुटबॉल प्रतियोगिता में भाग लेना क्लब के लिए बहुत गर्व की बात है और हम 2022 एएफसी चैंपियंस लीग का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हम प्रशंसकों की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करेंगे।

सचिन ने इंडियन ओपन खिताब जीतने पर लक्ष्य सेन, सात्विक और चिराग को दी बधाई

नई दिल्ली। महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने सोमवार को सात्विकसाईराज रैंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी को इंडियन ओपन 2022 के पुरुष युगल फाइनल का खिताब जीतने पर बधाई दी है, साथ ही सचिन ने पुरुष एकल का खिताब जीतने पर लक्ष्य सेन को भी बधाई दी है।

भारतीय खिलाड़ियों की युगल और एकल दोनों जीत उच्च श्रेणी के विरोधियों के खिलाफ आईं और विशेष रूप से महत्वपूर्ण थीं। तेंदुलकर ने ट्वीट किया, पुरुष एकल खिताब जीतने पर लक्ष्य सेन और युगल खिताब जीतने पर चिराग शेट्टी औ? सात्विकसाईराज रैंकीरेड्डी को बधाई। इन्हीं से बनते हैं सपने! आप सभी ने देश को गौरवान्वित किया है!

सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारतीय जोड़ी ने रविवार को 43 मिनट तक चले मैच में इंडोनेशिया की मोहम्मद अहसान और हेंड्रा सेतियावान की जोड़ी को सीधे सेटों में 21-16, 26-24 से हराकर खिताब जीता। वहीं, लक्ष्य सेन ने 54 मिनट तक चले फाइनल मुकाबले में सिंगापुर के लोह कीन यू को 24-22, 21-17 से हराकर पुरुष एकल का खिताब जीता था।

डोडा में आयोजित की गई पीर पंजाल कबड्डी लीग

जम्मू। भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर पुलिस, स्वास्थ्य विभाग, जिला खेल प्राधिकरणों और नागरिक प्रशासन के निकट समन्वय में स्पोर्ट्स स्टेडियम डोडा में पीर पंजाल कबड्डी लीग का आयोजन किया। रक्षा प्रवक्ता की ओर से रविवार को इसकी जानकारी दी गई।

इसमें कहा गया कि लीग ने तीन दिनों तक डोडा के लोगों को मंत्रमुग्ध किया। इसमें डोडा, किश्तवाड़, भद्रवाह, रामबन और नौशेरा सहित जिलों और क्षेत्रों से सात टीमों के साथ रचनात्मक तरीके से बड़ी संख्या में युवाओं को शामिल किया गया। भारतीय सेना के सेक्टर कमांडर ने मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। समापन समारोह में डोडा के नागरिक गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।

वॉलीबाल प्रतियोगिता में गोरखपुर टीम विजेता, वाराणसी बनी उपविजेता

प्रयागराज। डिस्ट्रिक्ट वॉलीबाल एसोसिएशन, प्रयागराज के तत्वावधान में गोपाल विद्यालय इंटर कॉलेज, कोरांव में दो दिवसीय ह्मृत्युंजय प्रताप सिंह स्मारक वॉलीबॉल प्रतियोगिताह्न हुई। इसमें गोरखपुर स्पोर्टस कॉलेज की टीम ने वॉलीबाल क्लब वाराणसी की टीम को 25-19 और 25-18 अंकों से हराकर ह्मृत्युंजय प्रताप सिंह स्मारक वालीबॉल प्रतियोगिता की ट्रॉफी जीत ली। उक्त प्रतियोगिता में कुल 21 टीमों ने प्रतिभाग कर अपने खेल कौशल का प्रदर्शन किया। नॉक आउट सिस्टम से खेली गई उक्त प्रतियोगिता के प्रथम दिन स्थानीय टीमों के बीच हुए फाइनल मैच के मुकाबले में कड़े संघर्ष के साथ स्पोर्टिंग क्लब मिजार्पुर की

टीम ने सोरांव यूथ क्लब मेजा की टीम को 25-23, 20-25 और 25-23 अंकों से हराया था।

इसके पूर्व अन्य खेले गए मैचों के मुकाबले में गोरखपुर स्पोर्ट्स कॉलेज ने पुलिस लाइंस, प्रयागराज को तथा सीडीए पेंशन प्रयागराज की टीमों को लगातार दोनों सेटों में पराजित करके फाइनल में प्रवेश किया था। प्रतियोगिता में अल्ताफ अली, मुकेश शुक्ला, नृपजीत सचान, असफाक अहमद, रवि वर्मा और संतोष भास्कर ने निर्णायक की भूमिका अदा की।

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मेजबान विद्यालय के प्रबंधक रूद्र नारायण बाजपेई ने विजेता टीम को ट्रॉफी के साथ-साथ 11,000 रू. तथा उपविजेता टीम को ट्रॉफी के साथ साथ 7000 रू. नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। मेजबान विद्यालय के प्रधानाचार्य साबिर अली ने धन्यवाद ज्ञापित किया। जिला वालीबाल संघ प्रयागराज के महासचिव आरपी शुक्ला ने समस्त प्रतिभागी खिलाड़ियों एवं निर्णायकों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सांसद प्रतिनिधि प्रयागराज राजेश त्रिपाठी, पूर्व क्रीड़ा अधिकारी के.पी.सिंह, प्रभात कुमार राय (अध्यक्ष वालीबाल संघ), संजय प्रताप सिंह (आयोजन सचिव), आनंद प्रताप सिंह आशुतोष सिंह, बबुआन द्विवेदी, रवींद्र सिंह, धीरेंद्र प्रताप सिंह, राहुल मिश्रा, गणेश शंकर तिवारी, सतेंद्र प्रताप सिंह, रजनीश तिवारी आदि उपस्थित रहे।

पीकेएल-8 के दूसरे चरण की घोषणा

20 जनवरी से 4 फरवरी तक खेले जाएंगे 33 मैच

बेंगलुरू। प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) के आयोजक मशाल स्पोर्ट्स ने सोमवार को चल रही राउंड-रॉबिन लीग के दूसरे चरण की घोषणा की, जिसमें 20 जनवरी से 4 फरवरी, 2022 तक 33 मैच खेले जाने हैं। बता दें कि इससे पहले आयोजकों ने पहले चरण में 66 मैचों का सफलतापूर्वक आयोजन किया। पीकेएल सीजन 8 के 66 मैचों की एक महत्वपूर्ण विशेषता 12 पीकेएल टीमों के बीच प्रतिस्पर्धा की बढ़ी हुई गुणवत्ता रही है। अधिकतर मैचों में जीत हार का अंतर काफी कम रहा है। लीग के आयोजकों को विश्वास है कि 33 मैचों के अगले दौर में लीग की प्रतिस्पर्धी गुणवत्ता में और वृद्धि होगी, विशेष रूप से इसमें पीकेएल टीमों के बीच 'प्रतिद्वंद्विता

सप्ताह' शामिल है, जहां खेलने वाली टीमों को उनके संबंधित भौगोलिक क्षेत्रों के बीच लोकप्रिय भावनाओं और लोककथाओं के लिए चुना जाता है। पीकेएल सीजन 8 का 'प्रतिद्वंद्विता सप्ताह' 31 जनवरी से 4 फरवरी तक खेला जाएगा। प्रतिद्वंद्विता सप्ताह सहित आगामी 33 मैचों के बाद 33 मैचों का अंतिम दौर होगा जो सीजन 8 के 132 मैचों के राउंड-रॉबिन चरण को पूरा करेगा। इसके बाद प्ले-ऑफ राउंड होगा और उसके बाद सीजन 8 का ग्रैंड फिनाले आयोजित किया जाएगा।

एशेज में खेलने का बचपन का सपना आखिरकार सच हो गया : सैम बिलिंग्स

होबार्ट। इंग्लैंड के विकेटकीपर-बल्लेबाज सैम बिलिंग्स ने सोमवार को कहा कि आखिरकार एशेज टेस्ट में खेलने का उनका बचपन का सपना आखिरकार सच हो गया। बिलिंग्स ने पांचवें और अंतिम एशेज टेस्ट में पदार्पण किया था जो रविवार को समाप्त हुआ। बिलिंग्स ने ट्वीट किया, "पिछले कुछ दिनों में मिले अविश्वसनीय संदेशों और समर्थन को स्वीकार करना चाहता हूं। सभी को धन्यवाद। एशेज में इंग्लैंड के लिए टेस्ट मैच खेलने का बचपन का सपना सच में पूरा हुआ।" बिलिंग्स ने होबार्ट टेस्ट के

पहली पारी में 29 और दूसरी पारी में 1 रन बनाया था। साथ ही हाथों में दस्तानों के साथ उन्होंने प्रभावशाली प्रदर्शन भी किया।

बता दें कि ऑस्ट्रेलिया ने रविवार को ब्लंडस्टोन एरिना में पांचवें एशेज टेस्ट में इंग्लैंड को 146 रनों से हराकर पांच मैचों की श्रृंखला 4-0 से अपने नाम कर ली।

ऑस्ट्रेलियन ओपन के दूसरे दौर में पहुंचे राफेल नडाल

मेलबर्न। स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी छठी वरीयता प्राप्त राफेल नडाल ने सोमवार को रॉड लेवर एरिना में अमेरिका के मार्कोस गिरोन को हराकर ऑस्ट्रेलियन ओपन के दूसरे दौर में प्रवेश किया। 2009 के ऑस्ट्रेलियन चैंपियन नडाल ने एक घंटे 49 मिनट तक चले मैच में गिरोन को 6-1, 6-4, 6-2 से हराया। यह ऑस्ट्रेलियन ओपन में नडाल की 70वीं जीत भी थी। दूसरे दौर में 20 बार के ग्रैंड स्लैम विजेता नडाल का सामना जर्मनी के यानिक हनफमैन और ऑस्ट्रेलिया के थानासी कोकिनाकिस के बीच होने वाले मैच की विजेता से होगा।

इससे पहले दिन में, कार्लोस अल्कराज ने चिली के क्वालीफायर एलेजांडो ताबिलो को 6-2, 6-2, 6-3 से हराकर दूसरे दौर में प्रवेश किया। वहीं, मार्गरेट कोर्ट एरिना में सातवीं वरीयता प्राप्त माटेओ बेरेटिनी ने शुरूआती दौर में यूएसए के ब्रैंडन नकाशिमा को हराया। तीन घंटे 10 मिनट तक चले मुकाबले में इटली के बेरेटिनी ने नकाशिमा को 4-6, 6-2, 7-6 (5), 6-3 से मात दी।

इंडिया ओपन 2022 का खिताब जीतना मेरा सपना था : सात्विकसाईराज रैंकीरेड्डी

नई दिल्ली। इंडिया ओपन 2022 का युगल खिताब जीतने पर भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी सात्विकसाईराज रैंकीरेड्डी ने कहा है कि जब से उन्होंने बैडमिंटन खेलना शुरू किया

तब से यह टूनामेंट जीतना उनका सपना था। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारतीय जोड़ी ने रविवार को यहां केडी जाधव स्टेडियम में इंडियन ओपन 2022 के पुरुष युगल फाइनल में जीत हासिल की। भारतीय जोड़ी ने 43 मिनट तक चले मैच में इंडोनेशिया की मोहम्मद अहसान और हेंड्रा सेतियावान की जोड़ी को सीधे सेटों में 21-16, 26-24 से शिकस्त दी। सात्विकसाईराज ने कहा कि वह खुश हैं कि उन्होंने युगल फाइनल में अपनी आइडल जोड़ी को हराकर खिताब जीता, जो उनके लिए एक सपना था।

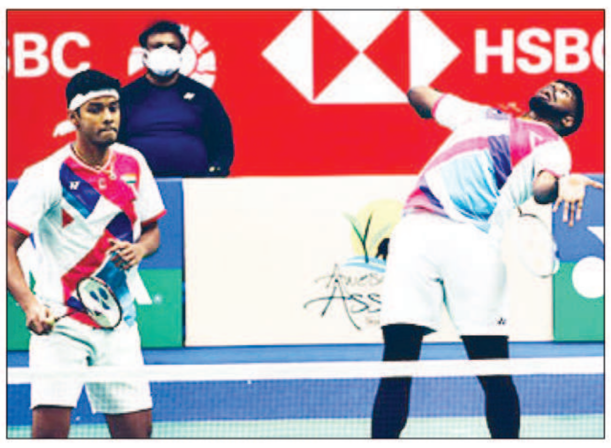

सात्विकसाईराज ने ट्वीट किया, "जब से मैंने बैडमिंटन की शुरूआत की है, इंडियन ओपन जीतना हमेशा मेरी बकेट लिस्ट में होता है। आज जिस तरह से हमने फाइनल में अपनी आइडल जोड़ी को हराकर जीता वह वास्तव में एक सपना है। शुभकामनाओं के लिए सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। 2022 की इससे बेहतर शुरूआत नहीं हो सकती।" युगल के अलावा, शटलर लक्ष्य सेन ने भी 54 मिनट तक चले फाइनल मुकाबले में सिंगापुर के लोह कीन यू को 24-22, 21-17 से हराकर पुरुष एकल का फाइनल जीता।

ऑस्ट्रेलियन ओपन : ओसाका ने जीत के साथ की अपने अभियान की शुरूआत

मेलबर्न। जापान की दिग्गज महिला टेनिस खिलाड़ी और गत चैंपियन नाओमी ओसाका ने सोमवार को अपने ऑस्ट्रेलियन ओपन अभियान की शानदार शुरूआत की। ओसाका ने पहले दौर के मुकाबले में कोलंबिया की कैमिला ओसोरियो को 6-3, 6-3 से हराया। 13वीं वरीय ओसाका, जिन्होंने 2019 के साथ-साथ पिछले साल भी ऑस्ट्रेलियन ओपन का खिताब जीता था, ने 20 वर्षीय ओसोरियो को 68 मिनट तक चले मुकाबले में शिकस्त दी।

इससे पहले, पांचवीं वरीय ग्रीस की मारिया सक्कारी 2022 ऑस्ट्रेलियन ओपन के दूसरे दौर में जाने वाली पहली शीर्ष -10 खिलाड़ी बनीं। मारिया ने पहले मैच में जर्मनी की तातजाना मारिया को एक घंटा 46 मिनट तक चले मुकाबले में 6-4, 7-6 (2) से हराया। सक्कारी दूसरे दौर में चीनी

क्वालीफायर झेंग किनवेन से भिड़ेंगी। 19 वर्षीय झेंग ने टूनामेंट के पहले दौर में बेलारूस की अलिकसांद्रा सासनोविच को 6-3, 1-6, 7-6 (5) से हराया।

15वें नंबर की यूक्रेन की एलिना स्वितोलिना ने भी फ्रांस की फियोना फेरो को एक घंटे 32 मिनट तक चले मुकाबले में 6-1, 7-6(4) से हराकर दूसरे दौर में प्रवेश किया। ओलंपिक चैंपियन बेलिंडा बेनसिक ने भी अपने शुरूआती दौर में जीत हासिल की। उन्होंने पहले दौर में फ्रांस की क्रिस्टीना म्लादेनोविक को डेढ़ घंटे तक चले मुकाबले में 6-4, 6-3 से हराया।

आयरलैंड का ऐतिहासिक प्रदर्शन, वेस्टइंडीज के खिलाफ 2-1 से जीती एकदिनी श्रृंखला

किंग्स्टन। एंडी मैकब्राइन और हैरी टेक्टर के बेहतरीन अर्धशतकीय पारियों की बदौलत आयरलैंड ने वेस्टइंडीज को दो विकेट से हराकर तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला में 2-1 की ऐतिहासिक जीत दर्ज ली। आयरलैंड की यह आईसीसी पूर्ण सदस्य पर घर से दूर पहली एकदिवसीय श्रृंखला जीत है।

तीन मैचों की एकदिनी श्रृंखला का

पहला मैच वेस्टइंडीज ने 24 रन से जीता था, जबकि इसके बाद आयरलैंड ने दूसरा मैच 5 विकेट और अब तीसरा मैच दो विकेट से जीतकर श्रृंखला अपने नाम कर ली। तीसरे एकदिवसीय मैच में आयरलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। वेस्टइंडीज ने साई होप (53) के अर्धशतक और जेसन होल्डर (44), अकिल होसैन (23) व ओडियन स्मिथ (नाबाद 20) की पारियों की बदौलत 44.4 ओवर में सभी विकेट खोकर 212 रन बनाए। इसके बाद जवाब में आयरलैंड ने एंडी मैकब्राइन (59), हैरी टेक्टर (52) के बेहतरीन अर्धशतकों व कप्तान पॉल स्टर्लिंग (44) के धैर्यभरी भारी की बदौलत 44.5 ओवर में 8 विकेट पर 214 रन बनाकर जीत हासिल कर ली।

सोनी बेकर अंडर-19 विश्व कप से बाहर

जॉर्ज टाउन। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज सोनी बेकर पीठ में खिंचाव की चोट के कारण चल रहे अंडर -19 विश्व कप से बाहर हो गए हैं। बेकर की जगह यॉर्कशायर के गेंदबाज बेन क्लिफ को टीम में शामिल किया गया है ईएसपीएनक्रिकइंफो की एक रिपोर्ट के अनुसार, बेकर को अभ्यास मैच के दौरान बेचैनी महसूस हुई और उन्हें तत्काल एमआरआई स्कैन के लिए भेजा गया। एमआरआई स्कैन से उनकी रीढ़ की हड्डी में तनाव का पता चला। तेज गेंदबाज अब रिहैबिलिटेशन के लिए स्वदेश वापस लौटेंगे इस बीच इंग्लैंड ने रविवार को गत चैम्पियन बांग्लादेश के खिलाफ प्रचंड जीत के साथ अपने अभियान की शुरूआत की। इंग्लैंड ने इस मुकाबले में बांग्लादेश को 35.2 ओवर में केवल 97 रनों पर समेट दिया।

रियल मैड्रिड ने जीता स्पेनिश सुपर कप का खिताब, एथलेटिक बिलबाओ को दी शिकस्त

रियाद। रियल मैड्रिड ने रविवार रात एथलेटिक बिलबाओ को 2-0 से हराकर रियाद में अपना 12 वां स्पेनिश सुपर कप खिताब जीता। खिताबी मुकाबले में रियल मैड्रिड

ने तेज शुरूआत की। मैच के 38वें मिनट में लुका मोड्रिक ने बेहतरीन गोल कर मैड्रिट को 1-0 से आगे कर दिया। मध्यांतर तक मैड्रिड ने अपने 1-0 की बढ़त को बरकरार रखा।मध्यांतर के बाद मैच के 52वें मिनट में मैड्रिड को पेनल्टी मिली, जिसेकरीम बेंजेमा ने गोल में बदलकर अपनी टीम को 2-0 से आगे कर दिया।

अबू धाबी हवाई अड्डे पर हाउदी विद्रोहियों का ड्रोन से हमला, टैंकरों में विस्फोट

अबू धाबी। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की राजधानी अबू धाबी स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर हाउदी विद्रोहियों ने हमला कर दिया। इस ड्रोन हमले से हवाई अड्डे पर आग लग गयी और कई ईंधन टैंकरों में विस्फोट हो गया। यमन के हाउदी विद्रोहियों ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक शुरूआती जांच में यह हमला ड्रोन जैसी छोटी उड़ने वाली वस्तुओं से किया गया प्रतीत होता है। इन ड्रोन की मदद से अबू धाबी के दो स्थानों पर विस्फोट किये गए। इनसे अबू धाबी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के एक हिस्से में आग लग गई। साथ ही वहां मौजूद तेल के तीन टैंकरों में भी विस्फोट हुआ। इस घटनाक्रम के

बाद हवाई अड्डे के आसपास हड़कंप मच गया। हालांकि अभी तक इस हमले में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।हाउदी विद्रोहियों का मुख्य दुश्मन सऊदी अरब को माना जाता है क्योंकि वह इनके खिलाफ लड़ने के लिए खाड़ी देशों के एक गठबंधन का नेतृत्व कर रहा है। संयुक्त अरब अमीरात भी यमन के गृह युद्ध में हाउदी विद्रोहियों के खिलाफ गठबंधन में सऊदी अरब के साथ मिल कर लड़ाई लड़ रहा है। संयुक्त अरब अमीरात ने पिछले कुछ महीनों में यमन के हाउदी विद्रोही ठिकानों पर अपने हवाई हमले तेज कर दिये हैं। इस पर ईरान समर्थित हाउदी समूह ने जवाबी कार्रवाई की बात कही थी। अबू धाबी हवाई अड्डे पर हुए हमलों को इसी कार्रवाई का हिस्सा माना जा रहा है।

चीन ने बनाया नकली चांद, पूरी तरह खत्म करेगा गुरुत्वाकर्षण

बीजिंग। पिछले दिनों नकली सूरज बना कर चर्चा में आए चीन के वैज्ञानिकों ने अब नकली चांद बनाने में सफलता पाई है।

यह नकली चांद गुरुत्वाकर्षण पर शोध करने के लिए बनाया गया, ताकि गुरुत्वाकर्षण को पूरी तरह खत्म कर यातायात के नए तरीके खोजे जा सकें।

चाइना यूनिवर्सिटी ऑफ माइनिंग एंड टेक्नोलॉजी के जियोटेक्नीकल इंजीनियर ली रुईलिन ने कहा कि इस प्रयोग में चुंबकीय शक्ति की परख की गई, ताकि भविष्य में चुंबकीय शक्ति से चलने वाले यान और यातायात के नए तरीके खोजे जा सकें। साथ ही चांद पर इंसानी बस्ती बनाने की परिकल्पना पर भी काम हो रहा है।

उन्होंने बताया कि अभी एक छोटा प्रयोग किया गया है। इस साल के अंत तक दो फीट व्यास वाला एक ताकतवर चुंबकीय शक्ति वाला वैक्यूम चेंबर बनाया जाएगा। इस चेंबर को पत्थरों और धूल से बिल्कुल उसी तरह भर दिया जाएगा, जैसी चांद पर सतह होती है। पहला प्रयोग सफल होने का दावा करते हुए उन्होंने कहा कि अगले प्रयोग में लंबे समय तक कम गुरुत्वाकर्षण शक्ति बनाए रखने की योजना है।

इससे पहले चीन एक नकली सूरज का निर्माण कर चुका है। इस वर्ष की शुरूआत में उस नकली सूरज ने 17 मिनट तक असली सूरज से पांच गुना अधिक तापमान उत्पन्न किया था। चीन के पूर्वी अनहुई प्रांत में बनाया गया वह नकली सूरज इससे पहले मई 2021 में 101 सेकेंड तक 12 करोड़ डिग्री सेल्सियस तापमान उत्पन्न कर चुका था। इस नकली सूरज से चीन को बिजली समस्या से मुक्ति मिलने की उम्मीद है।

उत्तर कोरिया ने फिर दागी मिसाइल, दक्षिण कोरिया व जापान चिंतित

सियोल। पूरी दुनिया के विरोध और रोकटोक की परवाह किये बिना उत्तर कोरिया का मिसाइल व परमाणु कार्यक्रम रुकने का नाम नहीं ले रहा है। उत्तर कोरिया ने महीने में चौथी बार मिसाइल दागी है। दक्षिण कोरिया व जापान ने इसे बैलेस्टिक मिसाइल बताते हुए चिंता जाहिर की है। उत्तर कोरिया इस माह में एक हाइपरसोनिक मिसाइल टेस्ट के साथ तीन बार मिसाइल लांच कर चुका था। अब चौथी मिसाइल दाग दी गयी है। दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ ने कहा कि इसका रुख जापान सागर की ओर था। उन्होंने कहा कि उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंग्यांग के सुनान हवाई अड्डे से पूर्व की ओर ये शार्ट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल दागी गयीं। जापान के कोस्ट गार्ड ने भी इसको एक बैलेस्टिक मिसाइल ही बताया है।

डूरंड लाइन पर बाड़ लगाने को लेकर भिड़े तालिबान व पाकिस्तान के सैनिक, तोपों ने उगले गोले

इस्लामाबाद। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सरहद पर 2600 किलोमीटर लंबी डूरंड लाइन पर बाड़ लगाने को लेकर तालिबान व पाकिस्तान के बीच संघर्ष हो गया। संघर्ष इस कदर बढ़ गया कि तोपों ने गोले उगले, जो आसपास के रिहायशी इलाकों तक जाकर गिरे।तालिबान डूरंड लाइन पर बाड़ लगाने की पाकिस्तानी कोशिशों का विरोध कर रहा है। इस पर बीती रात पाकिस्तानी सेना ने तालिबानी ठिकानों पर तोपों से गोले बरसाना शुरू कर दिया। इसके जवाब में तालिबानी आतंकियों ने गोले बरसाए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार पाकिस्तानी सेना की ओर से दागे गए तोप के कई गोले अफगानिस्तान के कुनार प्रांत के

सरकानो जिले में जाकर गिरे। इसके जवाब में तालिबानी आतंकियों ने भी अपनी तोपों से गोले दागे।

दरअसल, डूरंड लाइन को लेकर पाकिस्तान व अफगानिस्तान का विवाद नया नहीं है। अफगानिस्तान का कहना है कि अंग्रेजों के जमाने में तत्कालीन भारत (अब पाकिस्तान का हिस्सा) और अफगानिस्तान की सीमा पर जिस डूरंड लाइन को सीमा रेखा करार दिया गया था, वह सही नहीं है। इस सीमा रेखा ने पश्तून कबीलों को बांट दिया है। पिछले दिनों अफगान विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इनायातुल्लाह ख्वारजमी ने एक वीडियो ट्वीट कर पाकिस्तान द्वारा सीमा पर बाड़ लगाए जाने को अनुचित व गैरकानूनी करार दिया था। पाकिस्तान के गृह मंत्री शेख रसीद ने हाल ही डूरंड लाइन कंटीले तारों की बाड़ लगाने का काम तालिबान की सहमति से पूरा करने की बात कही थी।

दक्षिण कोरिया व जापान चिंतित

उत्तर कोरिया ने फिर दागी मिसाइल

सियोल। पूरी दुनिया के विरोध और रोकटोक की परवाह किये बिना उत्तर कोरिया का मिसाइल व परमाणु कार्यक्रम रुकने का नाम नहीं ले रहा है।

उत्तर कोरिया ने महीने में चौथी बार मिसाइल दागी है। दक्षिण कोरिया व जापान ने इसे बैलेस्टिक मिसाइल बताते हुए चिंता जाहिर की है। उत्तर कोरिया इस माह में एक हाइपरसोनिक मिसाइल टेस्ट के साथ तीन बार मिसाइल लांच कर चुका था। अब चौथी मिसाइल दाग दी गयी है। दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टाफ ने कहा कि इसका रुख जापान सागर की ओर था। उन्होंने कहा कि उत्तर कोरिया की राजधानी प्योंग्यांग के सुनान हवाई अड्डे से पूर्व की ओर ये शार्ट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल दागी गयीं।

जापान के कोस्ट गार्ड ने भी इसको एक बैलेस्टिक मिसाइल ही बताया है। मिसाइल दागे जाने के बाद जापान के प्रधानमंत्री कार्यालय ने इस मिसाइल के बारे में अधिकाधिक जानकारी हासिल कर विश्लेषण के निर्देश दिये हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से किए गए एक ट्वीट में मिसाइल के मद्देनजर अपने सभी विमानों व दूसरे संसाधनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही हर समय चुनौती का सामने करने के लिए तैयार रहने की बात भी कही गयी है। उल्लेखनीय है कि पिछले सप्ताह ही उत्तर कोरिया ने ट्रेन से एक मिसाइल दाग कर इसे फायरिंग ड्रिल करार दिया था। तब उत्तर कोरिया ने दो मिसाइल जापान सागर की ओर दागे जाने की बात स्वीकार की थी। माह भीतर चौथी मिसाइल दागे जाने के बाद क्षेत्र में तनाव बढ़ने की उम्मीद है।

नेपाल ने तरेरी आंखें: लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और कालापानी को बताया अपना

काठमांडू। भारतीय राज्य उत्तराखंड के लिपुलेख में सड़क चौड़ीकरण के मसले पर अब नेपाल सरकार ने आंखें तरेरी हैं। नेपाल के सूचना एवं प्रसारण मंत्री ज्ञानेंद्र बहादुर कार्की ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा के अनुरूप लिपुलेख में सड़क चौड़ीकरण पर विरोध दर्ज कराया है।

कार्की ने कहा है कि काली नदी का पूर्वी इलाका लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और कालापानी नेपाल के अभिन्न हिस्से हैं और उस इलाके में भारत को किसी तरह का निर्माण नहीं करना चाहिए। नेपाल के मंत्री ने कहा कि दोनों देशों के बीच सीमा विवाद का हल ऐतिहासिक दस्तावेजों, नक्शों व साक्ष्यों के आधार पर दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों की भावना को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

नेपाल पहले भी लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और कालापानी को लेकर भारत के साथ तनाव की स्थिति बना चुका है। वर्ष 2020 में नेपाल द्वारा जारी नए राजनीतिक नक्शे में इन इलाकों को नेपाल का हिस्सा दिखाए जाने पर भी विवाद हुआ था।

दरअसल, लिपुलेख से होकर ही तिब्बत स्थित मानसरोवर जाने का रास्ता है। भारत ने लिपुलेख इलाके में सीमा पर सड़क निर्माण किया था, तब भी नेपाल ने इस सड़क निर्माण पर विरोध दर्ज कराया था। पिछले महीने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लिपुलेख की इस सड़क के चौड़ीकरण की घोषणा की थी। इस फैसले पर नेपाल की ओर से सरकार ने आधिकारिक रूप से तो कोई विरोध नहीं दर्ज कराया किन्तु सत्तारूढ़ नेपाली कांग्रेस की ओर से विरोध के स्वर उठे थे। अब नेपाल के सूचना मंत्री द्वारा इस मसले का विरोध किये जाने से मामला फिर गर्मा गया है।

पाकिस्तान के पायलट ने बीच रास्ते में किया हवाई जहाज उड़ाने से इनकार

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के हालात किस कदर खराब हो गए हैं, उसका नमूना बीच-बीच में देखने को मिलता रहता है। अब हवाई यात्रा में एक पाकिस्तान पायलट की मनमानी का मामला सामने आया है। पाकिस्तान

इंटरनेशनल एयरलाइंस (पीआईए) की एक उड़ान के बीच में पायलट ने अपनी शिफ्ट खत्म हो जाने का हवाला देकर हवाई जहाज उड़ाने से इनकार कर दिया। इससे यात्रियों में हड़कंप मच गया। पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस के एक विमान की उड़ान संख्या पीके-9754 ने गत दिवस सऊदी अरब की राजधानी रियाद से पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद के लिए उड़ान भरी। इस बीच मौसम खराब होने के कारण विमान को दम्मम में उतारना पड़ा। इस बीच जब दम्मम से पुनः इस्लामाबाद के लिए हवाई जहाज के उड़ान भरने की बात आयी, तो पाकिस्तानी पायलट ने अपनी शिफ्ट खत्म होने का हवाला देकर विमान उड़ाने से इनकार कर दिया। इस तरह बीच यात्रा में पायलट के इनकार से वहां स्थितियां असहज हो गयीं। गुस्साए यात्री भड़क गए और उन्होंने विमान से उतरने से इनकार कर दिया। यात्रियों का कहना था कि पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस को पहले से ही ऐसी स्थितियों से निपटने का समुचित प्रबंध करना चाहिए था। बाद में स्थिति को नियंत्रण में करने के लिए हवाई अड्डे के सुरक्षा बलों को बुलाना पड़ा। इस संबंध में पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस के प्रवक्ता ने कहा कि यात्रियों की सुरक्षा के लिए पायलटों का समुचित विश्राम आवश्यक है।

कोरोना का कहर: फ्रांस व ब्रिटेन के अस्पतालों में हालात खराब

पेरिस/लंदन। कोरोना का कहर फ्रांस व ब्रिटेन जैसे देशों को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। इन देशों में अस्पतालों में मरीजों को भर्ती करना मुश्किल हो गया है, जिस कारण गंभीर रोगियों का इलाज बाधित हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इसे लेकर चिंता जताई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि फ्रांस और ब्रिटेन जैसे देशों में दुनिया के कई देशों की तुलना में सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचा खासा मजबूत है। इसके बावजूद वहां मरीजों के दबाव में पूरी उपचार व्यवस्था ध्वस्त हो गयी है। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि इस स्वास्थ्य प्रबंधन को सुधार कर अधिक मरीजों तक उसका लाभ पहुंचाया जा सकता था किन्तु ऐसा नहीं हो सका है।

कोरोना के दुष्प्रभाव से फ्रांस के अस्पतालों में मरीजों को लौटाना पड़

रहा है। वहां तमाम अस्पतालों में 20 प्रतिशत तक स्वास्थ्य कर्मी संक्रमित हैं। इस कारण गंभीर मरीजों को अस्पताल की चौखट से लौटाने की मजबूरी का सामना इन अस्पतालों के प्रबंधन को करना पड़ रहा है। ब्रिटेन में भी कमोवेश यही स्थिति है। वहां लंदन के अस्पतालों में सेना की तैनाती करनी पड़ी ताकि एंबुलेंस, पैथोलॉजी परीक्षणों जैसी प्रारंभिक व आपातकालीन जरूरतों को पूरा किया जा सके। ब्रिटेन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा परिसंघ के मुताबिक कोविड के चलते एक लाख से अधिक स्वास्थ्य कर्मियों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। 59 लाख से अधिक कैंसर पीड़ित लोग जांच व सर्जरी आदि से वंचित हैं।

चीन को खुश करने के लिए बांग्लादेश अनावश्यक रूप से खरीद रहा रेल के मीटर गेज वैगन

ढाका। अपनी विस्तारवादी नीति की वजह से भारतीय उपमहाद्वीप में लगातार खतरा बनते जा रहे चीन को खुश करने में अब भारत का पड़ोसी बांग्लादेश भी जुट गया है। बांग्लादेश गैरजरूरी तरीके से मीटर गेज रेलवे वैगन की खरीद कर चीन को खुश करने में लगा है। वर्तमान में, बांग्लादेश रेलवे के पूर्वी क्षेत्र में 560 मीटर गेज वैगन हैं। इनमें से 360 वैगन परिचालन में हैं।लोगों को मानना है कि बाकी को थोड़ी मरम्मत के बाद चलाया जा सकता है। वित्त वर्ष 2020-21 में पूर्वी क्षेत्र में वस्तु परिवहन क्षेत्र से राजस्व 145 करोड़ रुपये रहा है। सिलहट से उर्वरकों और चटगांव से चावल और गेहूं सहित सभी सामानों का परिवहन वर्तमान में मीटर गेज वैगन से किया जा सकता है।

साथ ही सिलहट अगौरा की रेलवे लाइन में खराबी के चलते 30 की जगह 12 वैगनों का उपयोग माल परिवहन के लिए करना पड़ रहा है। इसके बाद भी बांग्लादेश चीन से अनावश्यक रूप से मीटर गेज वैगन खरीद रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि 2013 में चीन से खरीदी गई डेमो ट्रेन की तरह यह मीटर गेज वैगन भी उसके लिए गले की फांस बनने वाले हैं।

बांग्लादेश रेलवे एशियाई विकास बैंक (एडीबी) और बांग्लादेश सरकार के वित्त पोषण से चीनी सीआरआरसी शेडोंग कंपनी लिमिटेड से 36 कवर्ड, 164 खुली और 20 ब्रेक वैन खरीदने जा रही है। बांग्लादेश रेलवे ने कंपनी के साथ 26 दिसंबर को 318.63 करोड़ रुपये के खरीद समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह मीटर गेज वैगन मार्च-अप्रैल 2023 से पहुंचने शुरू हो जाएंगे। समझौते के मुताबिक, वैगनों की डिलीवरी 18 से 30 महीने के भीतर करनी होती है। हालांकि, फिलहाल ज्यादातर मालगाड़ियां पश्चिम में चलती हैं। इनमें से लगभग सभी ट्रेनें ब्रॉड गेज की हैं। इसके अलावा, कोरोना काल में भारत से रेल के माल आयात में भी वृद्धि हुई है। रेल परिवहन विभाग के संबंधित लोगों का मानना है कि मांग नहीं होने के कारण मीटर गेज वैगन का इस्तेमाल नहीं होगा। नतीजतन, परियोजना के नाम पर बड़ी रकम बर्बाद हो जाएगी।

रेल परिवहन विभाग के अधिकारियों के अनुसार बांग्लादेश के प्रधानमंत्री के निर्देश के बाद पिछले छह वर्ष में बांग्लादेश में कोई नया मीटर गेज रेलवे निर्माण परियोजना शुरू नहीं की गई है। पुराने मीटर गेज रेलवे को भी चरणों में ब्रॉड गेज या ड्यूल गेज में परिवर्तित किया जा रहा है तो 20 साल बाद देश में मीटर गेज रेलवे नहीं रहेगा। इसके अलावा, बांग्लादेश के पूर्वी हिस्से (पद्मा के पूर्वी तट) में मालगाड़ियां बहुत कम चलती हैं। क्षेत्र में मुख्य रूप से कंटेनर ट्रेनें और डीजल ट्रेनें चलती हैं। यही कारण है कि विभिन्न प्रकार के वैगन और टैंकर हैं।

ऐसे में स्थानीय विशेषज्ञों का दावा है कि चीन को केवल खुश करने के लिए खरीद हो रही है।

इस संबंध में बांग्लादेश के रेल मंत्री नुरुल इस्लाम सुजान कहते हैं, "किसी देश को खुश करने के लिए नहीं मीटर गेज रेलवे को ब्रॉड गेज में बदलने में 20 साल और लगेंगे। इसलिए यह मीटर गेज वैगन चीन से खरीदा जा रहा है।"

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज 1/6C माधव कुंज कटरा प्रयागराज से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

पाकिस्तानी अखबारों से: इमरान सरकार पर बढ़ा विपक्ष का दबाव, बचाव में उतरे मंत्री

नई दिल्ली। पाकिस्तान से सोमवार को प्रकाशित अधिकांश समाचारपत्रों ने इमरान खान सरकार के खिलाफ विपक्ष के बढ़ रहे दबाव को देखते हुए मंत्रिमंडल के सहयोगियों के जरिए सामने आकर सरकार का बचाव किए जाने की खबरें प्रमुखता से छापी हैं। अखबारों ने लिखा है कि केंद्रीय मंत्रिमंडल के सहयोगियों ने कहा है कि सरकार का डील, ढील और इमरजेंसी लगाने का कोई इरादा नहीं है। केंद्रीय गृह मंत्री शेख रशीद ने कहा है कि शाहबाज शरीफ डरावना नहीं सुहाना ख्वाब हैं। उनका कहना है कि दो के बजाय 3 मार्च कर लें, कुछ भी नहीं होगा। अपोजिशन की अंधी मछलियां इनहाउस तब्दीली का ख्वाब देख रही हैं। इन्हें मुंह की खानी पड़ेगी। बीमारी का ड्रामा करके लंदन भागने वाले बुजदिल हैं।

अखबारों ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन की सरकार के एक साल पूरा करने पर एक सर्वे रिपोर्ट प्रकाशित

की है जिसमें बताया गया है कि उनके समर्थक काफी मायूस हुए हैं। अखबारों ने ह्यप्रधानमंत्री मोदी का भारत धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए खतरनाक मुल्क बन गया हैह्ल शीर्षक से खबरें भी प्रकाशित की हैं। अखबारों ने म्यांमार की अपदस्थ नेता आंग सान सूची पर करप्शन के कई और मुकदमे स्थापित किए जाने की खबरें भी दी हैं। अखबारों ने अमेरिका में यहूदियों के धार्मिक स्थल में अपहृत किए गए व्यक्तियों को छुड़ाए जाने और अपहरणकर्ता को मार गिराए जाने की खबरें भी दी हैं।

अखबारों ने लिखा है कि आफिया सिद्दीकी की रिहाई की मांग करने वाले इस व्यक्ति को मार गिराया गया है। डॉक्टर आफिया सिद्दीकी की बहन फौजिया सिद्दीकी ने दावा किया है कि टेक्सास में मारे जाने वाला व्यक्ति उनका भाई नहीं है। अखबारों ने इमरान खान सरकार के खिलाफ पूर्व राष्ट्रपति आसिफ जरदारी और पीडीएम अध्यक्ष मौलाना फजलुर्रहमान के बीच टेलीफोन पर बातचीत किए जाने की खबरें भी दी हैं। अखबारों ने अफगानिस्तान में महिलाओं के प्रदर्शन पर तालिबान के जरिए मिर्च स्प्रे के छिड़काव किए जाने की खबरें दी हैं। अखबारों ने एक और खबर दी है जिसमें बताया गया है कि तालिबान ने लड़कियों के स्कूल खोलने का फैसला लिया है। यह सभी खबरें रोजनामा दुनिया, रोजनामा खबरें, रोजनामा औसाफ, रोजनामा पाकिस्तान, रोजनामा एक्सप्रेस, रोजनामा नवाएवक्त और रोजनामा जंग ने अपने पहले पन्ने पर छापी हैं। रोजनामा पाकिस्तान ने एक खबर जम्मू-कश्मीर से छापी है जिसमें बताया गया है कि यासीन मलिक की पत्नी मशाल मलिक ने आरोप लगाया है कि पूर्व सेनाध्यक्ष और पूर्व सीडीएस जनरल बिपिन रावत को कश्मीर घाटी को जहन्नम में तब्दील करने के लिए हमेशा याद रखा जाएगा। अखबार ने बताया है कि पीस एंड कल्चर ऑर्गेनाइजेशन की चेयरमैन मशाल मलिक ने कहा है कि जनरल बिपिन रावत के कार्यकाल में कश्मीरियों पर बेइंतहा जुल्म ढाए गए हैं। उनका कहना है कि कश्मीरी कभी उन्हें भूल नहीं पाएंगे।

रोजनामा दुनिया ने एक खबर दी है जिसमें बताया गया है कि फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन कोरोना वायरस की वजह से काम नहीं होने से परेशान हैं। अखबार ने बताया कि भारत में कोरोना के बढ़ते फैलाव की वजह से काम नहीं होने से आम लोगों के साथ-साथ फिल्म इंडस्ट्री के लोग भी परेशान हैं। अखबार ने बताया है कि फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन भी काम नहीं मिलने की वजह से काफी परेशानी महसूस कर रहे हैं।

रोजनामा एक्सप्रेस एक खबर दी है जिसमें बताया गया है कि फिल्म अभिनेता सलमान खान अपनी जिंदगी के रहस्य के राज को खोलने